अग्रवाल अंतर ज्वाला

अग्रबन्धु

वार्षिक १०) | **अग्रबन्धु** | एक प्रति १)

वर्ष १८] मार्च १९७५ [अंक ६

भू० पू० प्रधान संरक्षक
सेठ बिशम्भर नाथ 'भगत'
बी. पी. आयल मिल, आगरा।

प्रधान संरक्षक
कुन्ज बिहारीलाल अग्रवाल
भू० पू० नगरप्रमुख, आगरा

विशेषांक सम्पादक
श्यामसरन अग्रवाल 'विक्रम'

सम्पादक मंडल
डा० भगवतशरण अग्रवाल
नवरंगपुरा, अहमदाबाद
त्रिलोक गोयल
अग्रसेन नगर, आगरा गेट, अजमेर
द्वारकाप्रसाद गर्ग
अर्मेनी स्ट्रीट, कलकत्ता-१
नरेन्द्र मोहन अग्रवाल 'पागल'
गांधी चौक, नागपुर
दुलीचन्द अग्रवाल 'शशि'
हिन्दी नगर, हैदराबाद
घनश्याम दास गुप्ता
२३ बेनजीर क्वाटर, भोपाल
राजेन्द्र प्रसाद गर्ग
८६, थरागु पेट, बंगलौर
बद्रीप्रसाद अग्रवाल
जीवन बीमा कालोनी, जबलपुर

प्रधान सम्पादक
प्रकाश बंसल

व्यवस्थापक
दीनानाथ गर्ग, फिरोजाबाद
विमल बंसल, अनिल कुमार
फोन : ६३६०९ पी० पी०

कार्यालय : **अग्रबन्धु मासिक,**
प्रयाग नरायन मार्ग, आगरा।

दर्द और दवा

सूफी संत सरमद मुसलमान होकर भी दिल्ली में गाते घूम रहे थेः–

"सूये मस्जिद मी रवम
अम्मा मुसलमां नेस्तम ,,

—मैं मस्जिद की तरफ जाता हूँ लेकिन मुसलमान नहीं हूं।

अक्सर दिगंबर सरमद बड़ी मस्ती से अपने आप से ही सवाल करते थे–

चेखता दीदों अल्ला हो रसूल
मुराद लक्ष्मनो राम शुदी ?

ऐ सरमद। तूने रसूलिल्लाह में क्या बुराई देखी कि राम-लक्ष्मण का प्रेमी बन गया।

आखिर इसी अपराध में औरंगजेब ने सरमद को गिरफ्तार किया और उस अत्यन्त पवित्र महात्मा को सजाये मौत दे दी। गिरफ्तारी के पहले, कुछ दिनों से सरमद का सिर दर्द करता रहता था–अतःजिस दिन उन्हें वध–स्थान पर ले जाया गया और जल्लाद उनका सिर काटने की तैयारी करनें लगे तो अपनी रोज की मस्ती में सरमद ने जल्लादों की ओर उंगली उठाकर कहां समुपस्थित अपने स्नेहीजनों से कहा—

सर जुदा मर्द अज तनम
शोखे कि था मा यार बूद,
किस्साह कोता कर्द बर्ना
दर्दे-सर बिसिमार बूद

—वाह ! बड़े आनन्द की बात है, देखो तो मेरे प्यारे ने स्वयं ही मेरा सिर शरीर से अलग कर दिया, यह कितना हितकारी हुआ क्योंकि मेरे इस सिर की पीड़ा सीमा पार करती जा रही थी।

सम्पादकीय—

होली पर सत्य को नहीं असत्य को जलाना हैं

राक्षस राज हिरण कश्यप ने जब देखा कि प्रहलाद मेरे रास्ते पर नहीं आता है तो उसने अपनी बहन होलिका से कहा प्रहलाद को लेकर अग्नि में प्रवेश करो। तुम तो वरदानी चुनरी के कारण जलोगी नहीं और प्रहलाद जल जायेगा। लेकिन असत्य रूपी होलिका का दहन हो गया और सत्य रूपी प्रहलाद हरि हरि कह कर अग्नि में से निकल आये।

आज हमारा देश बड़ी गम्भीर परिस्थिति में से गुजर रहा है। देश के बचाने के लिए हमको सत्य की रक्षा के लिए असत्य को भस्म करना होगा। वह तभी होगा जब सब तज राष्ट्र भज का मन्त्र ग्रहण कर के इस होली के हवन कुन्ड में सभी असत्य रूपी खराबियों को स्वाहा कर देंगे।

शासक का कर्त्तव्य है कि राष्ट्रोत्थान हेतु स्वार्थ, भाई भतीजा वाद एवं दलबन्दी से उठकर राष्ट्रोन्नति के मार्ग को प्रसस्त करें। और उसके मार्ग में सगे से सगा भी आजाय तो उसे स्वाहा कर दें। लेकिन होता है इसका उल्टा। हमारा शासन रहना चाहिये चाहें उसके लिये भ्रष्ट तरीकों से चुनाव जीतना पड़े चाहें भ्रष्टाचारी एवं तस्करों से चुनाव फन्ड में रूपया लेना पड़े। चाहें जनता को कितनी भी भूख प्यास सहनी पड़े। पगडंडियों में सोना पड़े। चिथड़े भी नसीव न हो लेकिन हमको, हमारे साथियों, रिस्तेदारों, खुशामदियों को माल पुए उडाने को, कोठी बंगला रहने को और सेर सपाटे को इम्पोर्टेड कारें, हवाई जहाज व आलीशान होटलें तथा एय्यासी को सुरा सुन्दरी चाहिए ही चाहिए। फिर कैसे होगा देश का कल्याण। होली में फुकना पड़ेगा ऐशो आराम और स्वार्थपरिता, और जनता के दुख दर्द को दूर करने के लिये कन्धे से कन्धा लगा कर आगे बढ़ना पड़ेगा, तभी होगा देश का उत्थान।

केवल थोथे नारों एवं दिखावटी विरोध से आज के युग कुछ नहीं होगा। टटोलना होगा दिलों को और बुराईयों को निकाल कर होली में स्वाह करना होगा। अपना, अपने-२ दलों का और अपने साथियों का हित त्याग कर राष्ट्रहित सर्वो-परि मानकर ही देश हित में कुछ हो सकेगा। स्वार्थ भरी होलिका को दफनाना ही पड़ेगा। स्वार्थ छुटेगा तो न विधायक विकेंगे न कारपरेटर बिकेंगे। और जब विकेंगे ही नहीं तो फिर कैसे होंगी लाल की पीली, पीली की सफेद, सफेद की हरी नीली टोपियां और न पैसे के बल पर लाखों के घुटाले दबाये जायेंगे। फिर किसी

एक झन्डे के नीचे सबल शक्तिवान किसी नेता के नेतृत्व में बन सकेगा राष्ट्रहित में शाक्ति से परिपूर्ण विरोधी दल। अन्यथा योग्य पिछड़ जायेंगा और अयोग्य मौज उड़ायेगा।

आज देश में भ्रष्टाचार का ऐसा जोर है कि आज तक देखा न सुना और तो और आज लड़की वाला भी ऐसे लड़के को पसन्द करता है। जिसकी तनखा चाहें १००) १५०) हीं हो लेकिन उपरी आमदनी अवश्य हो।

जब उपरी आमदनी की नौकरी चाहिए तो भेंट पूजा अवश्य देनी होगी। आज हम नौकरी चाहते है। लेकिन मसक्कत की नहीं। हम चाहते हैं कि १० बजे के स्थान पर १०॥ बजे जाय और ११ बजे कार्य शुरू करें और सायं ४ बजे से छुट्टी का मुड बना ले। बीच में १ घन्टा लंच का तो है ही। जिस कार्यालय में २५ आदमी की जरूरत है वहाँ १०० आदमी लगे हैं। फिर भी फाइलों के अम्बार लगे हुए। जिस किसी बाबू को देखिये वही कह रहा है नया अधिकारी आया है पहिले ३ देने पड़ेते थे अब ५ देने पड़गे। जब तक राष्ट्र कार्य को हम अपना कार्य नहीं मानेगे तब तक राष्ट्र का भला नहीं हो सकता है। राष्ट्र का अहित होता रहा तो असत्य की होली नहीं बल्कि सत्य की होली जलती रहेगी।

आज व्यापारी हो या उद्योगपति, किसान हो या मजदूर, अधिकारी हो या चपरासी, शासक हो या विरोधी, किसे है राष्ट्र का ध्यान। आज कल के रक्षक भक्षक बन गये है। अगर भूले भटके कुछ गांधी बाबा बन गये तो उन्हें मूर्ख की उपाधी (चाहें होली पर ही सही) दी जाती है। आवश्यकता है त्याग की लेकिन त्याग हो आत्मा से जब तक हमारे नेता जो मार्ग दर्शक बने हुए हैं। नहीं सुधरेगे तब तक जनता का सुधरना असम्भव है।

यही दशा अग्रवाल समाज की हो रही है जहाँ करने धरने को कुछ नह लेकिन जब पद की बात आती है तब देखिये आपाधापी का दृश्य। जो कुर्सी से चिपक गये व २-४ वर्ष की कौन कहे १०-१५ वर्ष तक तो कुम्भकरणी निद्रा से करवट भी नहीं लेना चाहते। कन्या पक्ष वाला चाहता है मेरी पुत्री चाहे कंगाली में रही लेकिन शादी हो तो बड़े घर में ही, वर पक्ष चाहता है कि लड़के के पैदा होने से अब तक का खर्च कन्या पक्ष तो दे ही साथ में व्याह खर्च ब्याज में। फिर कैसे हो समाज सुधार। और कैसे हो कुरीतियों का निवारण। जब तक आत्मा से असत्य रूपी कूड़े करकट को निकालकर होली में नहीं जलायेंगे। तब तक कैसे सत्य रूपी प्रकाश आत्मा में प्रवेश कर सकेगा।

आईये और होली के हवन कुन्ड में असत्य को जला कर सत्य की ज्योति जगाये तभी हम सही रूप में होली मनाने के हकदार होंगे।

अग्रबन्धु : ५

पुराने और नये संदर्भ में—

होलिका दहन

—अशोक कुमार पोद्दार,
उज्जैन

होलिका दहन एक पवित्र और पावन हिन्दू त्यौहार है। चूंकि हिन्दुत्व विस्तृत रूप में एक मानव धर्म का ही बदला हुआ रूप था इसलिये हमारे समाज के निर्माताओं ने सामाजिक और धार्मिक महत्वपुर्ण घटनाओं को लेकर त्यौहारों के रूप में ऐसी परम्परायें डाल दी हैं जो अपने बदलते स्वरूपों के बावजूद आज भी विद्यमान है। धर्म का मुख्य उद्देश्य धर्म और मानवता की विजय तथा आसुरी और मानवता विरोधी शक्तियों का विनाश है अतः हमारा हर त्यौहार किसी न किसी अन्यायी व्यवस्था से संघर्ष का प्रतीक है।

कहा जाता है कि राजसत्ता और सपन्नता का मद मनुष्य को पागल बना देता है। अत्याचारी दैत्यराज हिरण्यकश्यप के घर भक्तराज प्रह्लाद ने जन्म लिया। प्रह्लाद की सत्य और नारायण में अटल निष्ठा थी इस प्रकार दैत्यराज के झूंठे घमण्ड से प्रह्लाद का टकराव होना अवश्यम्भावी था। सत्ता के मद ने पिता-पुत्र के स्नेह को भुला दिया। सत्य, असत्य और धर्म-अधर्म में युद्ध होने लगा।

सत्याग्रही प्रहलाद को दैत्यराज ने अपनी बहन होलिका की गोद में बैठने को कहा। (होलिका को यह वरदान मिला हुआ था जो उसकी गोद में बैठता था वह जलकर भस्म हो जाता था) परन्तु ज्यो ही होलिका ने बालक प्रह्लाद को अपनी गोद में बिठाया और अग्नि को प्रज्वलित किया, त्यों ही बुराई, अत्याचार और अधर्म की प्रतीक यह नारी अपनी लगाई आग में वह स्वयं ही भस्म हो गई। प्रहलाद अपने सत्य स्वरूप में कुन्दन की तरह प्रखर होकर पवित्र हो गये।

तभी से होलिका दहन का यह त्यौहार मनाया जाता है। आज भी उक्त घटना हमें अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध सघर्ष करने की प्रेरणा देती है। सत्ता और सत्य का टकराव आज भी जारी है। धर्म और अधर्म का युद्ध आज भो चल रहा है। सत्याग्रही सत्य को समझने का आग्रह कर रहे हैं, नेतृत्व कर रहे हैं साक्षात नारायण—सत्य को लेकर चल रहे हैं इसलिये जय तो प्रस्तुत है ही—जहां सत्य और धर्म है वहां प्रकाश भी है ७३ वर्षीय बूढ़ा शेर आज सत्ता के कानून में निर्द्वन्द घूम रहा है, दहाड रहा है, अन्याय, अत्याचार को दूर करने के लिए पुकार रहा है, देश की लोकतांत्रिक शक्तियों को पुकार रहा है। राष्ट्र मांग रहा है बलिदान प्रहलाद के समान तपने की हिम्मत है क्या किसी में? आज हमें इस आंदोलन के महायज्ञ में अपनी-अपनी आहूतियों को देना है ताकि भावी पीढ़ी को नया मार्गदर्शन मिल सके। होलिका दहन के पावन अवसर पर क्यों न हम भ्रस्टाचार भाई भतीजावाद, और बेकारी को होलिका दहन की पावन अग्नि में जलाकर हमेशा-हमेशा के लिए भस्म कर देवें ताकि हमारे देश का यह लोकतांत्रिक स्वरूप बलिदान की पावन आग में तपकर फिर स्वर्ण बन सतगुण सहस्त्रगुण तेज से दमक उठे।

बीडी का बण्डल और मंत्री मण्डल

विधायक बाप ने बीडी पीकर टुकडा फेंका।
बेटे ने उसे चुपचाप उठाकर
एक दो फूंक खेंचकर देखा॥
संयोग से पिताजी की पड़ गई नज़र।
दो चार तमाचे दिये कसकर॥
बीड़ी पीता है नालायक?
गालियों के भाषण झाड़ने लगे विधायक॥
गाल सहलाते हुए लड़का पेटीकोट गवर्नमेण्ट के पास पहुंचा
माँ ने आसू पोंछ कर पूछा
बेटे क्यों रो रहा है?
विद्रोही स्वर में छोकरा बोला
"मम्मी!
पिताजी ने घर को भी देश समझ रखा है
जो कुछ वहाँ कर रहे हैं, बही यहाँ हो रहा है॥'
माँ ने प्यार से झिडका
"बात को बाप की तरह घुमाते हो।
जो कुछ हुआ है साफ साफ क्यों नही बताते हो?"
बेटा बोला 'माँ!
पुलिस चोर को पकड़ती है—पुलिस को कौन पकड़े?
पिताजी के आदेश से
छोटे मोटे छापे रोज ही मारे जा रहे हैं।
लेकिन स्वयं तस्करों के तस्कर
काली कुर्सी पर पडे पडे समाजवादी आरती गा रहे हैं?
जिसने बीडी का एक टुकडा पीया
उसे सजा दे रहा है मंत्री मण्डल?
खुद पी रहा है बीडियों के बण्डल के बण्डल?"
मां ने कहा
"बेटे! थोड़े दिनों की बात और है,
ये दीन से गये हैं—दुनियाँ से भी चले जायेंगे।
तुम्हारे लिये बीडियों का बण्डल नहीं
बीडियों का कारखाना छोड़ जायेंगे।

—त्रिलोक गोयल, अजमेर

समाजोत्थान में सामाजिक संगठनों की उपादेयता

प्रो० हुकुमचन्द अग्र०
(जन्म १५अगस्त २५, मध्यम वर्गीय परिवार में जन्में और बढ़, आर्थिक और सामाजिक विषयों के अच्छे समीक्षक हैं। विगत अनेक वर्षों से सामाजिक कार्यों में एवं समाज विकास में सक्रिय सहयोग दे रहे हैं। सम्प्रति जबलपुर के गोबिन्दराम सेक्सेरिया अर्थ वाणिज्य महाविद्यालय जबलपुर के प्रोफेसर हैं।)

हमारी वर्तमान आर्थिक और सामाजिक स्थिति का जो चित्र उभरा हुआ दिखाई दे रहा है वह संतोषजनक नहीं है। वैज्ञानिक खोज-शोध तथा उससे प्राप्त उपलब्धियों से मानव जीवन थोड़ा सुखी और समृद्ध बना हो परन्तु उसने हमारी अध्यात्म, धर्मदर्शन तथा प्राचीन सामाजिक मान्यताओं और आदर्श को नष्ट भी किया है। हम देख रहे हैं कि आज आदमी आत्मकेन्द्रित, क्षुद्र और स्वार्थी बनता जा रहा हैं। भय और संकोच की परिधि के बहार होने के कारण वह विचारहीन और भोगवादी बनता जा रहा है। परिणामस्वरूप परिवार का विघटन होकर सामाजिक इकाई के रूप में उसका अस्तित्व मिट रहा है। इसी कारण जीवन के नैतिक मूल्यों का ह्रास और आदर्श लुप्त हो रहे हैं। इसी पृष्ठ भूमि में व्यक्ति और समाज के विकास के लिए सामाजिक संगठनों की आवश्यकता प्रतीत होती है।

समय तेजी से बदल रहा है इसलिये बदलते हुये समय के साथ हमें भी अपनी समाज व्यवस्था तथा रीति-नीति में परिवर्तन करना बांछनीय है। देश के साथ हम सब आज आर्थिक संकट के फौलादी चंगुल में फँसे हुये हैं जिस कारण अपने परम्परागत धार्मिक सामाजिक कार्यों और उत्तरदायित्व का निर्वाह करने में कठिनाई का अनुभव कर रहे है। अतएव सामूहिक जीवन को पुनर्जिवित करने की आवश्यकता है जिसे सामाजिक संगठनों के माध्यम से किया जा सकता है।

बुराई दहेज देने में नहीं मांगने में है

सामान्यतः हम शादी विवाह सम्बन्धी कठिनाई को ही सबसे बड़ी समस्या मानते हैं जो बास्तव में सही भी है। दहेज का अभिषाय इसमें बड़ी बाधा समझा जाता जिस कारण कई बेमेल विवाहों के प्रकरण हमारे सामने आते हैं। वस्तुतः इसका कारण सामाजिक संगठनों के अभाव में वांछित जानकारी की कमी और हमारा अज्ञान है। दहेज बुरी चीज नहीं है। दहेज हमेशा दिया जाता है और भविष्य में दिया जाता रहेगा। 'बुराई दहेज देने में नहीं है दहेज मांगने में है' इसलिये दहेज की मांग की प्रवृत्ति का विरोध किया जाना चाहिये जो संगठन की शक्ति के द्वारा प्रभावशाली रूप से किया जा सकता है।

अतएव सामाजिक संगठनों के माध्यम से हमें अपने जातीय बन्धुओं को आत्म-ज्ञान, आत्म बोध और कर्तव्य-बोध कराने के साथ साथ हमें शिक्षा तथा रोजगार आदि पर भी विचार कर योजनाबद्ध तरीके से सक्रिय और परिणामदायक कार्य करने हैं।

संगठन कैसा हो—

वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए एक सशक्त संगठन की आवश्यकता होती है इसलिए उसका स्वरूप और गठन बड़ी सावधानी से किया जाना चाहिये। चूंकि ये ऐच्छिक संगठन होते है इसलिए पूर्ण कालिक (Full time) कार्य करने वाले लोग सम्भवतः न मिल पायें फिर भी निष्ठावान और कर्मठ कार्यकर्ताओं का चयन किया जाना चाहिए। इसमें सभी वर्गों के लोगों का सानुपातिक प्रतिनिधित्व होना चाहिए। चूँकि समस्याऐं अधिकतर गरीबों की होती है इसलिए उनका प्रतिनिधित्व अधिक होना चाहिए जिससे संगठन को उन तक पहुंचने और उन्हें समझने में आसानी हो। धनिकों, बुद्धजीवियों, युवकों और महिलाओं को भी संगठन में उचित स्थान दिया जाना चाहिये। परन्तु यह ध्यान रहे कि सामान्य लोगों से दूर रहने वाले धनाढ्य स्वयंम् नेता इसमें न घुसने पावें अन्यथा ये अवसरवादी लोग समाज के धन पर, समाज के नाम पर आत्म प्रचार में लीन रहते हुये समाज को गुमराह करते रहेंगे और समाज की समस्यायें यथावत् बनी रहेगी। हमारे अनेक संगठनों के सम्बन्ध में यह शिकायत मुखर रही है कि इनमें धनाढ्य लोगों का वर्चस्व है जो धनशक्ति के चमत्कार से अपना शीर्षस्थ स्थान बनाने में सफल हो जाते हैं। चूँकि हमारी समस्याएँ बहुत हैं और हमारी मंजिल बहुत दूर है इसलिए संगठन को समयोचित स्वरूप प्रदान किये जाने की आवश्यकता है। संक्षेप में, सगठन में नेता नहीं कार्यकर्ता होना चाहिए जो सृजनात्मक कार्य कर सकें।

बड़ी घोषणायें नहीं कार्य बड़े हों—

संगठन तथा उनके पदाधिकारियों पर प्रस्तावित अथवा घोषित कार्यक्रम को क्रियान्वित करने का उत्तरदायित्व होता है। उन्हें बहुत सोच-बिचार कर अपने साधन स्रोतों को ध्यान में रखते हुये कार्यक्रम तैयार करना चाहिये। मैं यह करूंगा-मैं वह करूँगा, हमें यह करना चाहिए हमें वह करना चाहिए। भावी कार्यक्रमों के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करना और उस सम्बन्ध में दूसरों से परामर्श लेने में कोई आपत्ति नहीं है, परन्तु मैं जो कहता हूं वह कर ही लूँगा ऐसी घोषणा नही करनी चाहिए। इसी प्रकार सामाजिक धन का, इस अन्दाज से कि कोई विरोध नहीं करेगा, मनमाने ढंग से दुरुपयोग अथवा उपयोग नहीं किया जाना चाहिये।

वर्तमान समस्या मूलक परिस्थितियों में उचित यही है कि हम आज की सोचे और उसे निपटाने का भरसक प्रयत्न करें। सामाजिक कार्य सत्कार्य है। इसके

सम्बन्ध में प्रभु ईसा का कथन ध्यान में रखना चाहिये कि जो सत्कार्य करना है उसे तुरन्त करना चाहिये। बांयें हाथ में जो दान देने के लिए है उसे दाहिने हाथ में मत ले जाओ। ऐसा न हो कि इस फेर बदल में मन ही बदल जाय। इसलिए सामाजिक कार्यों को बड़ी तत्परता और बगैर प्रचार भावना के किये जाने चाहिये। अच्छे कार्यों का प्रचार तो सुगन्ध की भांति चारों दिशाओं में फैल ही जाता है।

संगठन में धन की पूर्ति दान से—

सामाजिक कार्यों के लिए धन की बहुत आवश्यकता होती है समाज के हर व्यक्ति को इसमें यथाशक्ति सहयोग देना चाहिये परन्तु आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न लोगों को दान की हमारी सांस्कृतिक परम्परा का अनुकरण करना चाहिये और "परोपकाराय सतां विभूतयः" इस उक्ति से प्रेरणा लेना चाहिये। गरीब लोग धन से नहीं तो अन्य अनेक प्रकार से सहयोग कर सकते हैं। समय, श्रम, चिन्तन और सद्भावनाओं के माध्यम से भी लोकहित के कार्यों में योगदान दिया जा सकता है। निर्धन व्यक्ति अपना श्रम और समय देकर जो परमार्थ का कार्य कर सकते हैं वह धन से अधिक महत्वपूर्ण है। विचारों की क्षमता भी सांसारिक संपदा की तुलना में अधिक उपयोगी होती है। आदर्श विचार और सद्भावना हमारे पास ऐसे ईश्वरीय उपहार हैं जिनके द्वारा समाज को सुख और शांति उपलब्ध कराई जा सकती है।

महिलाओं का योगदान—

समाज सेवा के कार्य में पुरुषों के समान स्त्रियों का सहयोग भी महत्वपूर्ण और आवश्यक है। शारीरिक दृष्टि से नारी भले ही कमजोर हो परन्तु उसकी भावात्मक कोमलता, सरलता, सरसता, गृह व्यवस्था तथा शिशु निर्माण कार्य इतने महान् हैं कि पुरुष की बलिष्टता और उपार्जन क्षमता को उस पर न्यौछावर किया जा सकता है। हमारा इतिहास महिलाओं के चमत्कारी कार्यों से भरा पड़ा है।

शिक्षा की कमी तथा सामाजिक दूषित चिन्तन के कारण महिलाओं की प्रगति रुकी हुई है जिस कारण उन्हें सामाजिक कार्यों में आगे बढ़ने के अवसर नहीं मिल पा रहे है। इस अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष में महिलाओं को आगे बढ़ने का भरसक प्रयास किये जाने चाहिये। हमारी संस्कृति में नारी को शक्ति रूप माना गया है अतएव दरिद्रता निवारण के लिये नारी शक्ति का विकास आवश्यक है। "यत्र पूज्यन्ते नारी तत्र रमन्ते देवताः" इस उक्ति का महत्व समझना चाहिये।

उपरोक्त विचारों को ध्यान में रखते हुये समाज संगठनों का गठन और निर्माण किया जाना चाहिए। इससे जहां समाज में व्याप्त रूढ़ियों और कुरीतियों को समाप्त करने में सफलता मिलेगी वहीं शिक्षा और रोजगार के अवसर भी बढ़ाये जा सकेंगे। अतएव आत्मोन्नति के लिए समाज व संगठन को आधार बनाया जाना चाहिए। वैसे व्यक्ति और समाज एक दूसरे के पूरक हैं इसलिए चाणक्य के नीचे लिखे सूत्र से प्रेरणा लेनी चाहिए—

"आत्मनि रक्षेत् सर्वं रक्षती भवति। आत्मायत्तौ वृद्धि विनाशौ॥

अपनी रक्षा करने से सबकी रक्षा होती है। विकास या विनाश करना मनुष्य के हाथ की बात है।

अग्रवाल-इतिहास संबंधी ग्रन्थ

—प्रभुदयाल जी मित्तल साहित्य वाचस्पति, मथुरा

अग्रवाल जाति के इतिहास-लेखन का शुभारम्भ संभवतः भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने किया था। उन्होंने इस सम्बन्ध में 'अग्रवालों की उत्पत्ति' नामक एक पुस्तक लिखी, जिसका प्रथम संस्करण सन् १८७१ (सं० १९२८) में 'दि मेडिकल हाल प्रेस' बनारस में छप कर प्रकाशित हुआ था वही पुस्तक बाद में खड्ग विलास प्रेस,बांकीपुर (बिहार) और 'श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस' बम्बई से भी प्रकाशित हुई थी। भारतेन्दु जी की उक्त लोकप्रिय पुस्तक के पश्चात अग्रवालों के इतिहास से सम्बन्धित छोटा छोटी प्रायः ५० रचनाऐ अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं। किन्तु इनमे से ५-७ ही ऐसी हैं, जिन्हे इतिहास की संज्ञा दी जा सकती है। अन्य रचनाओं में अनुश्रुतियों और किवदंतियों की इतनी भरमार है कि उनमें प्रामणिक अंश बहुत थोड़ा ही मिलता है। इस प्रकार अग्रवाल जाति के एक सर्वांगपूर्ण इतिहास की आवश्यकता का अनुभव पहिले की भांति अब भी किया जा रहा है।

इस सम्बन्ध में जो रचनाऐ प्रकाशित हुई हैं उनमें से कुछ इस प्रकार हैं।

१–अग्रवालों की उत्पति	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	काशी,बांकीपुर,बम्बई	१८७१ ई०
२–अग्रवाल वंश्योत्कर्ष	हीरालाल शास्त्री	बम्बई	१९०९
३–अग्रवाल इतिहास	बिहारी लाल जैन	बाराबंकी	१९११
४–अग्रवाल इतिहास	चुन्नीलाल अग्रवाल	कलकत्ता	१९१५
५–अग्रवाल उत्पत्ति प्रकाश	प्रयागदत्त अग्रवाल	इलाहबाद	१९१८
६–अग्रवंश हितैषी	छितरमल गर्ग	अलीगढ़	१९१८
७–दिलवारी गिन्दौड़ियाअग्रवाल वैश्य	लक्ष्मीशंकर जिन्दल	फरुह	१९२०
८–अग्रवंश भास्कर	गणपतिराय अग्रवाल	सरदारशहर (बीकानेर)	१९२२
९–अग्रवाल इतिहास परिचय	बालचंन्द्र मोदी	कलकत्ता	—
१०–अग्रवाल वन्श कौमुदी	सुखानन्द मालवी		—
११–तवारीश कौम मारूफव(उर्दु)	—	—	—
१२–वैश्य अग्रवाल इतिहास	—	मेरठ	—
१३–मुख्तसर हालात महाराज अग्रसेन	—	मुरादाबाद	—
१४–केडिया जाति का इतिहास	—	—	—
१५–अग्रवंश(उर्दु)	एस० आर० गुप्त	सर्खा(पटियाला)	—
१६–अग्रवंश अर्थात अग्रवाल जाति का इतिहास	डा० रामचन्द गुप्त		१९२५
१७–अग्रवाल इतिहास	प्रभुदयाल मीतल	मथुरा	१९२४
१८–अग्रवाल जाति काप्रामणिक इतिहास	गुलाबचंद ऐरन	सनावद (इन्दौर)	—
१९–अग्रवाल उत्पति	ला० रामचंद	अजमेर	—
२०–श्रीविष्णु अग्रसेन वंश पुराण	ब्रहमानद ब्रहमचारी	अग्रोहा	—
२१–सचित्र इतिहास अग्रकुल भुषण	—	—	—
२२–अग्रवाल मीमांसा	ला० मुंशीराम	दिल्ली	—
२३–संक्षेप वृत्तांत	मुंशी अनुपसिंह	—	—
२४–जीवनी अग्रसेन महाराज	मुंशी रघुवीर सिंह	—	—
२५–अग्रवाल वंशावली	बा० सुमेरचन्द अग्रवाल	—	—
२६–राजाअग्रसेन काजीवन चरित्र	बेशीराम पुत्र शिवप्रताप	(इन्दौर)	—
२७–अग्रवाल जाति का इतिहास	श्री चंदराज भंडारी	—	—
२८–अग्रवाल जाति का इतिहासप्राचीन	डा० सत्यकेतु विद्यालंकार	दिल्ली	१९३८
२९–अग्रवाल जाति का इतिहास	श्री कमल नाथ अग्रवाल	काशी	—
३०– ,,	डा परमेश्वरीदास गुप्त	काशी	—

इसी ताक में

चाहे मुख्यद्वार से जाकर.
चाहे गुप्तद्वार से आकर.
इसी व्यवस्था के आंगन में—
किसी तरह विस्तर जम जाये,
हम सब हैं बस इसी ताक में।

गहरा भेद एक बतलायें,
जो हमने समझा समझाये।
मिलें पहन रेशम या खादी—
सबका लक्ष्य सिर्फ सुविधायें।
चाहे रथ को दायें घुमाकर,
चाहे रथ को बायें घुमाकर,
किसी तरह आगे बढ़ने को—
सीधे पथ हमको मिल जाये॥
हम सब ...

करते समाजवाद का लेखा,
उनके घर भी जाकर देखा,
ज्योतिषियों से पूछ रहे हैं—
हाथों में पूंजी की रेखा।
नीली, पीली लाल लगाकर,
चाहे टोपी श्वेत लगाकर,
भीडतंत्र में किसी तरह से—
अपने सिर ऊँचे दिख जायें॥
हम सब...

उमर हमेशा रहती प्यासी,
होता नहीं कोई संन्यासी,
ख्याति,मोक्ष,कंचन या तन का-
हर कोई रहता अभिलाषी।
चाहे तन के वसन रंगाकर,
चाहे तन कें वसन हटाकर.
किसी तरह उँची गद्दी के—
ऊँचे मठाधीश बन जायें॥
हम सब...

क्रांति जिसे कहता है कोई,
उसे भ्रांति कहता है कोई,
जनता रोटी मांग रही है—
उसकी कब सुनता है कोई।
चाहे गीत क्रांति के गाकर,
चाहे गीत भ्रांति के गाकर,
किसी तरह सत्ता के ऊपर—
बस अपने झण्डे लहरायें॥
हम सब ...

चाहे मुख्यद्वार मे जाकर,
चाहे गुप्तद्वार से आकर,
इसी व्यवस्था के आंगन में—
किसी तरह विस्तर जमजायें॥
हम सब है बस इसी ताक में।

—दिनेश सन्यासी आगरा-२

बहती गंगा

—बद्री प्रसाद अग्रवाल
जबलपुर

आइये हम सब एक होकर सगठित बनें जिससे हमारी शक्ति जागृत होकर समाज में एक नया रूप पैदा कर सके। सारा देश आज एक हो रहा है, विभिन्न दल बन गये हैं और लोग राजनैतिक स्वार्थ से घिर गये हैं। हम राजनीति में नहीं पड़ना चाहते हमें तो सामाजिक उत्थान की ओर बढ़ना है। पर उत्थान अपने आप नहीं आता, उसके लिए संगठित होकर कार्य करना आवश्यक है। प्रसन्नता की बात है कि हम लोगों ने उसके प्रयास प्रारम्भ कर दिये हैं और मुझे पूर्ण आशा है कि जिस छोटे से बीज को हमने बोया है वह अन्त में एक विशाल वृक्ष का रूप लेगा और उसकी शीतल छाया में समाज आनन्द का अनुभव करेगा। हमारे बीच कुछ फिरका परस्ती थी उससे हम एक दूसरे से खिचें रहते थे और अपने ही पड़ौसी को पहचान नहीं पाते थे पर समय ने अब करवट ली है। हमें ऊपर उठना होगा इस छोटे से दायरे से स्वयं को निकालकर एक विशाल दृष्टिकोण अपनाना होगा तभी हम एक दूसरे के प्रति प्रेम भाव जगा सकेंगे और उसे अपना अंग मान सकेंगे। वैसे हमारी जाति का इतिहास महाराजा अग्रसैन जी से प्रारम्भ होता है। वे हमारे आदि पुरुष थे और उनके सिद्धान्तों पर विश्वास रखने वाले, उनकी बसाई हुई नगरी अग्रोहा में वसने वाले हम अग्रवाल कहलाये। अग्रोहा में उस समय एक लाख वैश्य निवासी थे और यही सब हमारे पूर्वज थे। उन्होंने इन्हीं निवासियों में से प्रतिष्ठित १८ परिवारों को चुना और उन्हीं परिवारों से हमारी गोत्र प्रथा का प्रारम्भ हुआ। इस विषय में कई तरह की कथाएँ प्रचलित हैं। पर केवल कथा और किव्दंतियों के सहारे हम जीवित नहीं रह सकते। हमें सत्य को खोजना होगा और यदि सत्य कड़वा भी हुआ तो उसे निगलना होगा। हमारे समाज में प्रचलित खंड और विखंड अब चूर चूर हो गये। आज हम किसी भेद और प्रभेद को मान्यता नहीं देते और सारा समाज एक होकर बढ़ रहा है।

पिछले जमाने में लोगों को आने जाने में बहुत समय लगता था इसलिये वे अपने दायरे को बहुत सीमित रखना चाहते थे पर आज सारा देश हमारा घर है। काश्मीर से कन्याकुमारी और द्वारिकापुरी से आसाम तक हमारे भाई फैले हुए हैं और आप मेरे साथ सहमत होंगे कि वे सब अग्रवाल हैं न तो वे मारवाड़ी थे न यू.पी. वाले, न मध्य प्रदेश वाले, न बीसा न दशा, न पचा और न किसी दूसरे खंड में बटे हुए। वे सब एक थे और एक रहेंगे और हमारे बीच की दरार अब दूर हो गई है हिचकिचाहट तो रहती है पर बढ़िये और उसे एक ठोकर दीजिए और इसी में आपका, हमारा और पूरे अग्रवाल समाज का कल्याण है।

शादी विवाह की समस्या सबके सामने बड़ी विकराल तथा जटिल होती जा रहीं है। हर मां बाप को समाज के आगे उसी समय अपनी परिस्थिति का भान होता है जब उसे अपने पुत्र और पुत्रियों का वैवाहिक सम्बन्ध करना होता है। आदर्शवादी बातें उस समय काम नहीं आती और परिस्थितियों से निपटना हर इन्सान

हम क्या थे, क्या हैं और क्या होने जा रहे हैं। समय परिवर्तनशील है। समय के साथ चलते हुये बहती गंगा में हाथ धोलें अन्यथा हमको पिछड़ना पड़ेगा। सुयोग्ल लेखक ने इस लेख में उपरोक्त विषय पर समाज का अच्छा चित्रण किया है।

लेखक श्री बद्रीप्रसादजी अग्रवाल अनुभवी, क्रियाशील एवं सम्पन्न समाज सेवी बन्धु हैं। आप गत कई वर्षों से जबलपुर अग्रवाल सभा के अध्यक्ष हैं तथा नवगठित मध्य प्रदेश अग्रवाल महासभा के भी सर्वसम्मति से प्रथम अध्यक्ष निर्वाचित हुये हैं।

—सम्पादक

के लिए मुश्किल हो जाता है। एक तो हमारा क्षेत्र इतना सीमित रहता कि हमें एक दूसरे के बारे में जानकारी नहीं होती। हमें योग्य वर और कन्या नहीं मिल पाती और आर्थिक समस्याएँ हमें घेर लेती हैं जिस लड़की को हमने प्यार से पाल पोसकर बड़ा किया उसके लिए वर खरीदने को जब हमें मजबूर होना पड़ता है उस समय हम जिन्दगी से निराश होने लगते हैं। सीमित साधनों के बीच हम अपनी जिन्दगी गुजर बसर तो कर लेते हैं पर दहेज के लिए हजारों रुपये कहां से जुटाये जायें। इसी दहेज रूपी राक्षस के पीछे हजारों कन्यायें घर में ही बैठी रह जाती हैं। दहेज के अलावा एक और प्रश्न बड़ी तेजी से हमें मथता हैं वह है फिजूली खर्ची और दिखावा। क्या आवश्यकता है इतनी लम्बी बारात लेकर जाया जाये और लड़की वाला उनके खाने और ठहरने का प्रबन्ध करने में दौड़ा दौड़ा फिरे। फिर बाराती तो बाराती उनके नाक नक्शे तो अलग ही रहते हैं उस समय वह एक मनुष्य तो रह ही नहीं जाता। उसे तो यही ख्याल आता है कि हमारे नहाने का गर्म पानी ठंडा

शेष पृष्ठ ५२ पर

हँसी के रसगुल्ले

प्रस्तुतसर्ता—

स्मगलरों की एक टोली रेल में कहीं जा रही थी, एक देहाती भी उस डिब्बे में आ गया, स्मगलरों ने दिल बहलाने के लिये देहाती से बातचीत शुरू की तो बातों ही बातों में पता चला कि उसके घर लड़का पैदा हुआ हैं और वह पहली मर्तवा मां-बेटे को देखने जा रहा है।

स्मगलरों ने पूछा —तुम पिछली वार कव गांव गये थे ?

देहाती बोला, —"तीन साल पहले"

"और बच्चा कब पैदा हुआ ?" दूसरे स्मगलर ने पूछा–

देहाती बोला, "मई १५ दिन पहले"

तीसरा स्मगलर बोला फिर तो बच्चा तुम्हारा नहीं न जाने किसका होगा—सोचो लोग क्या कहेंगे ?"

देहाती बोला, मुझे कौन सा अपने पास रखना है, उसे आपकी टोली में शामिल कर दूंगा !

एक वहुत ही कन्जूस नव रईस का किस्सा है, पैट्रोल की वढ़ती हुई कीमत देखकर उसने फैसला कर लिया कि अभी नयी मोटर ले ली जाये तो बेहतर हैं वरना फिर कोई चांस नहीं रहेगा।

चुनांचे वह एक नई मोटर खरीदने पहुच गया और पूछा, "भई पहले ये बता दो कि ये मोटर कितने पेट्रोल में कितने मील जायेगी ?

मोटर वाला उसकी कन्जूसी से पहले ही वाकिफ था। बोला, 'अजी हजरत, ये तो एक स्पून (चमचा) में पच्चीस मील जायेगी।

वह बोला, "टेबुल स्पून या टी स्पून ?"

नबकुबेर ने एक लाख की लागत का एक आलीशान बंगला बनवाया और गृह-प्रवेश के दिन महमानों को सारा बंगला दिखाने के बाद टैरस पर बने निहायत खूब सूरत तीन स्वीमिंग पुल भी दिखाये उनमें से एक पूरा भरा था, दूसरा आधा भरा था, तीसरा खाली था, वह बताने लगा पहला उनके लिए है, जिन्हे खूब तैरना आता है, दूसरा

उनके लिए हैं जो तैरना नहीं जानते, पर नाहने के शौकीन हैं।

लेकिन यह तीसरा ? एक मेहमान ने खाली स्वीमिंग पुल की ओर इशारा करते हुए पूछा.

यह तीसरा नवकुबेर तपाक से बोला, उनके लिये है, जो चुल्ले भर पानी में डुव मरने की सलाह देते है।

चन्दन वहल ने फायर ब्रिगेड को फोन किया देखिये हाल ही में हमने अपने नौ लाख के बंगले के चारों ओर नया वगीचा लगाया है तरह तरह के दुर्लभ फूल लगाये है

"लेकिन आग कहां लगी है ?" दूसरी तरफ से आवाज आई।

और देखिये लॉन भी नई लगवाई है.....

और कुछ विदेशी फूल भी लगवा लिये है.....

तब तो आपको फायर ब्रिगेड में नही, किसी उद्यान विशेषज्ञ को फोन करना चाहिये था" फायर ब्रिगेड अधिकारी झल्ला कर बोला।

नहीं नहीं मुझे फायर ब्रिग्रेड की ही जरूरत है हमारे पड़ोस वाले बगले में आग लगी है कृपया अपने आदमियों को ताकीद कर दीजिये कि वे लोग भाग दौड़ में हमारा बगीचा न खराब कर डालें ?

सुवह सुवह एक सज्जन हमारे संगीत कक्ष में पहुचे तो देखा कि तानपूरा अलग हारमोनियम अलग और हम अलग उन्होंने कारण पूछा तो हमने चिंतित स्वर में कहा, "मंहगाई ने मार डाला यार ?"

"मंहगाई ? और आप ? बात कुछ जमती नहीं कल्याण जी" उन्होंने कहा हम बोले 'शक्कर, चावल तक तो गनीमत है लेकिन किरोसिन की दिक्कत ने सब गड़वड़ कर दिया"

किरोसिन की कमी से आपका क्या ? यार तुम समझते नहीं हो मेरी पत्नी जब भी मुझसे झगड़ती है,तो यहीं कहती है मैं किरोसिन छिड़क कर जल मरूगी मुझे यही डर हैं कि कही यह प्रोग्राम ही न कैंसिल हो जाये।

हँसी पर टैक्स है ?

—अनीन

वैश्य धर्म

प्रहलाद राय जी व्यास

(कल्याण से साभार)

भारतीय आर्य संस्कृति में चातुर्वर्ण्य-विभाग में 'वैश्य' तृतीय वर्ण है। यह समाज संस्था के अर्थविभाग का अध्यक्ष है। न्यायपूर्वक सबको सबकी आजीविका देते हुए व्यापार, कृषि और पशुपालन आदि के द्वारा अर्थ का उपार्जन करना और उसे तीनों वर्णों के भरण-पोषण में ट्रस्टी की भांति यथाविधान व्यय करके अपने लिए पारिश्रमिकस्वरूप जीविका-निर्वाहोपयोगी अर्थ ग्रहण करना इसका धर्म है। 'कृषिगोरक्ष्य-वाणिज्यं वैश्य कर्म स्वभावजम्।' वैश्यवर्ण ही समाज का प्राण है—आत्मा है। वैश्य व्यापारी का बहीखाता में सारा हिसाब-किताब ठीक रहता है और क्रियादक्षता, व्यापार कुशलता, ईमानदारी तथा सत्य का पालन उसके व्यवहार का प्रधान स्वरूप होता है।

'वाणिज्ये वसति लक्ष्मीः' धनप्राप्ति व्यापार से ही होती है। पाश्चात्य वाणिज्य-शास्त्रों के अनुसार व्यापारी में आठ गुण होने चाहिए। वे गुण इस प्रकार हैं, एनर्जी—कार्यक्षमता, ऐकानामी—मितव्ययिता, इन्टीग्रेटी—व्यापारिक एकता, सिस्टम—ढंग, सिम्पेथी—सहानुभूति एवं सहनशीलता, सिन्सीयरटी—विश्वासपात्रता, इम्पार्शियलिटी—निष्पक्षता और सेल्फ रिलाइन्स—आत्मविश्वास।

इन सिद्धान्तों पर आधारित व्यापार इतना सुदृढ़ तथा लाभप्रद होता है, जिसे कोई हानि नहीं पहुंचा सकता। उसमें कोई विघ्न नहीं डाल सकता और उसका अस्तित्व सदा बना रहेगा तथा उसकी सफलता अविरल गति से अपने लक्ष्य को प्राप्त करती जायगी। प्राश्चात्य वाणिज्य पद्धति में कई प्रकार की खाता पद्धति है, जैसे जर्नल, लेजर, कैशबुक आदि, परन्तु पाश्चात्य वाणिज्य पद्धति हमारी भारतीय खाता पद्धति के समक्ष अपूर्ण-सी लगती है। हमारे प्राचीन वाणिज्य-विज्ञान के अनुसार भारतीय वाणिज्य सात खातों में रक्खा जाता था। वे खाते इस प्रकार हैं—भू, भुव, स्व, मह, तप, सत्य। 'भू' खाते को हम रोजनामचा कहते हैं, 'भुव'—छोटी बही कहलाती है 'स्व' का अर्थ पक्की रोकड़ है, 'मह' का अर्थ खाता-बही है, 'तप' का अर्थ परिशोधन किया हुआ खाता यानी तलपट ट्रायल बैलन्स है। 'सत्य' खाते का अर्थ है चिट्ठा, जो लाभ-हानि अङ्कित करता है। प्राचीन भारत में व्यापार सत्य खाता रख कर सत्यतापूर्ण अपने लाभ का दस प्रतिशत बिना राज्य के मांगे राज्य में जमा करा देता था; क्योंकि वह यह जानता था कि यह विश्व-ऋणानुबन्ध है। जिस प्रकार ये सात भारतीय खाता-पद्धति हैं, उसी प्रकार विश्व में सप्त खंड हैं, जो भू, भुव, स्व, मह, जन, तप और सत्य-लोक कहलाते हैं। मनुष्य अपने-अपने कर्मों के अनुसार इन लोकों में पहुंचता है। यमराज का मुनीम चित्रगुप्त सबके खाते अपने पास रखता है;

इसलिये हमारा व्यापार ईमानदारी और सत्यता पर आधारित रहा हैं। ईमानदारी ही सर्वश्रेष्ठ नीति है। विदेशी विद्वान् इमर्सन का कथन है कि 'यथार्थता और ईमानदारी दोनों सगी बहिनें है।' पोप का मत है कि ईमानदारी मोती के सदृश निर्मल है जो मानव को सुशोभित करती है तथा बेईमानी व्यापारी को कलंकित करती है। हम दैनिक जीवन में यह भी देखते है कि जो व्यापारी ईमानदारी से व्यापार करता है, चीजों के भाव ठीक रखता है और उसकी दुकान पर चाहे बच्चा जाय या बूढ़ा, सभी को समान कीमत पर सामान देता है, इससे उसकी बिक्री अधिक होती है और जो व्यापारी चीजों के भाव ठीक नहीं रखता अथवा बाजार भाव से भी चीजे मँहगी बेचता है, उसका विश्वास ग्राहकों के हृदय से उठ जाता है और उस व्यापारी का व्यापार बन्द हो जाता है। एक कहावत है कि 'ग्राहक भगवान है'। वस्तुत यह सत्य हैं। ग्राहक को भगवान मानकर उनके हित की इच्छा के साथ ईमानदारी से व्यापार करने के कारण तुलाधार इतना उँचा महात्मा बन गया कि अच्छे-अच्छे योगी उससे सत्संग करने आते थे और अपने शिष्यों को उस व्यापारी के पास ज्ञान प्राप्त करने के लिये भेजते थे। ईमानदारी से व्यापार करना ही तुलाधार के मोक्ष का कारण बन गया। ईमानदारी के साथ व्यापार करने, ग्राहक के प्रति आदर-सहानुभूति एवं श्रद्धा रखने को ही हमारे शास्त्रों में भक्ति-मिश्रित कर्मयोग साधन कहा है।

हमारे विचार, व्यवहार और ईमानदारी होना व्यक्तिगत गुण होने के साथ ही राष्ट्रीय गुण भी है। श्री टी० ब्राउन का कहना है कि 'सत्य व्यापार व्यापारी को समृद्धिशाली बनाता है। बेइमानी लालसा उत्पन्न करती है जो विषमता का संचय करती चलती है। इससे पूर्व कि धन आपको लोभी बनाये आप दानी बन जाये।' श्री टी० ब्राउन का यह मत अत्यधिक सुन्दर है; क्योंकि हमारे देश में व्यापारी को सेठ कहते हैं जो 'श्रेष्ठ' शब्द का अपभ्रंश है। जिसका अर्थ महाजन यानी उत्तम पुरुष है। महाजन लोग जैसा आचरण करते हैं, समाज भी उन्हीं के पद-चिन्हों पर चलता है। अतः यह आवश्यक है कि महाजनों के द्वारा व्यापार में ईमानदारी रखना देश एवं समाज के उत्थान हेतु परमावश्यक है। प्रकृति के प्रतिकूल चलने वाले को 'पशु' कहते है। देश में संकटकालीन प्रकृति के प्रतिकूल यदि महाजन व्यापारी चलेंगे तो क्या वे पुरुष कहलाने के अधिकारी है; क्योंकि देश, काल एवं समाज की प्रकृति के अनुकूल चलने वाला पुरुष सही अर्थों में मनुष्य कहलाता है। उचित टैक्स न देना, नगरपालिका की चौकियों की चुंगी न देना, कीमतें बढ़ाना, भाव छिपाना, मिलावट करना—ये सब काम महाप्रकृति के प्रतिकूल ही तो हैं, जिनसे सर्वशक्तिशाली भगवान् असन्तुष्ट होते। रेल में बिना टिकट चलना हमारी व्यापारिक बेईमानी है। राजकीय कार्यालयों का काम भीं राजकीय व्यापार है। बाबू को इसी से असिस्टेन्ट कहा जाता है। यदि बाबू राजकीय के समय में काम ठीक नही करता अथवा गप्पें लड़ाता है

तो यह भी राजकीय व्यापार में ईमानदारी नहीं करता। जब कि हमारी संस्कृति है **'योग कर्मसु कौशलम'** योगी वही है जो अपने कर्म का कुशलता से पालन करता है। समाज अथवा व्यक्ति का कल्याण सत्याश्रित है। ईमानदारी से व्यापार एवं काम करने से आत्म-नियन्त्रण तथा आत्म-विश्वास की जागृति होती है। सत्यपालन से चित्त की वृत्तियों का, कलुषित भावनाओं का और असद्विचारों का निरोध होता है। यही कारण है कि हमारे देश का महामन्त्र 'सत्यमेव जयते' है। राजस्थानी में भी एक दोहा होता है—

सत मत छोड़े सूरमां मत छोड़यां पत जाय।
सत की बाँधी लिच्छिमी फेर मिलैगी आय॥

सत्य का त्याग करने पर लक्ष्मी नहीं और व्यक्ति का विश्वास समाज से उठ जाता है सत्य रहता है तो लक्ष्मी रहती है। एक उदाहरण है इसका। एक राजा ने यह घोषणा की कि 'मेरे राज में एक हाट लगाई जाय और उसमें यदि किसी व्यापारी का माल नहीं बिकेगा तो शाम को मैं उसे खरीद लूंगा।' एक दिन एक व्यापारी एक शनिश्चर की मूर्ति बना लाया। उसे किसी ने नहीं खरीदा तो शाम को राजा ने उसे खरीद लिया। मन्त्रियों ने मना किया कि इसे आप न खरीदें; क्योंकि शनिश्चर जहां रहता है, वहां सब नष्ट हो जाता है। पर राजा नहीं माने। वे भोजन करके सो गये। रात को लक्ष्मी आई और राजा से बोली—राजन्! तेरे यहां शनिश्चर आ गया है, इसलिये मैं जा रही हूं।' राजा ने कहा कि 'आप जा सकती हैं।' फिर धर्म आया और राजा से बोला कि 'मैं जा रहा हूं।' राजा ने उसे भी जाने की आज्ञा दे दी। अन्त में सत्य आया और राजा से बोला— तेरे यहां शनि आ गया है, इसलिये मैं यहां नहीं रह सकता, मैं भी जा रहा हूं।' तब राजा ने उठ कर सत्य के पाँव पकड लिये और कहा कि 'मैंने वचनों की सत्यता को निभाने के लिए ही शनि को खरीदा, नहीं तो मेरी सत्यता चली जाती। अब आप ही चले जायेंगे तो मेरा कौन है ?' सत्य ने जब सोचा कि 'राजा सचमुच सत्य पर है' तो नहीं गया। जब सत्य नहीं गया तब लक्ष्मी और धर्म को भी वापस आना पड़ा। अतः स्वयंसिद्ध है कि सत्यता में ही लक्ष्मी निवास करती है।

संसार की कोई वस्तु हमारे साथ नहीं चलेगी। सुख धन-संग्रह में नहीं है, वह तो मानव के अन्दर जो सत्य निहित है, उसके साथ संग करने में। यही 'सत्संग' कहलाता है। हमारे सत्कर्म ही हमें मुक्ति प्रदान करते हैं तो फिर हम सत्य सा त्याग किससे लिए करें ? जब कि—

माता पिता सुत भ्रात भार्या साथ कोई न जायगा।
उस पाक-कुंभी नरक में कोई न हाथ बटायगा॥

शेष पृष्ठ ५२ पर

दल बदल

—डा० भगवत शरण अग्रवाल
अहमदाबाद

जनतांत्रिकों के देश में
ओ कवि। आ .....
किसी दल में मिल जा।
गांधी-टैगोर का
"एकला चलो रे"—राग
समयातीत हो चुका है
क्या तूने गाँवों की
पुरानी कहावत भी नहीं सुनी
"अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता"
इसीलिए, ओ कवि !
रवि के आगे पहुंचने वाले—महाकवि
अपक्ष मत रह।
सेवा बिना मेवा नहीं है।
गुरू बना,
सूर-कबीर की परम्परा पाल,
मार्ग खुल जायेंगे,
जिससे तेरे अनेक अनुयायी
पहले तुझे
सुनने आयेंगे
शीश नवायेंगे
तेरी ख्याति,
घर घर पहुंचायेंगे,
तेरा गुन गायेंगे।
और एक दिन चुपके से
ईसा और गांधी के
रास्ते तुझे भेज
वास्तव में अमर कर
अमर हो जायेंगे।
और तेरी गद्दी को
दल, दल,
दल बदल
दलदल का
अखाड़ा बनायेंगे।
गणतांत्रिकों के इस देश में
ओ कवि
अकेला मत रह—
नहीं तो तेरा एक भी काव्य संग्रह
छप नहीं पायेगा
स्वर्ण पदक या अन्य पुरस्कार
दूर दूर तक—पास नहीं आयेगा
राज्य सभा में तेरा नाम
नामजद नहीं हो पायेगा
नहीं तू कहीं किसी
पाठ्यक्रम में लग पायेगा।
कल्पना लोक से उतर—ओ कवि !
यथार्थ की भूमि पर चल,
बना एक दल
और फिर
चाहे जितने
दल बदल॥

सामूहिक विवाह सम्मेलन

श्रीमती डा० स्वराज्य मणि अग्रवाल

जबलपुर

सामूहिक विवाह सम्मेलन एक ऐसा महायज्ञ है जहां प्राचीन वैवाहिक स्वस्थ परम्पराओं को, जो समय के थपेड़ों में मृत प्रायः हो रही थी पुनः जीवनदान दिया जा रहा है। समाज के कुछ वर्ग भले ही इसकी उपयोगिता को नहीं समझें, पर वह समय दूर नहीं जबकि भारतवर्ष के प्रत्येक वैवाहिक संबध इसी प्रकार के सम्मेलनों में सम्पन्न हुआ करेंगे। वर और कन्या का चुनाव, उनकी खोज करना, तथा बाद की वैवाहिक रीतियां, रूढ़ियां आज के त्रस्त जीवन में विष की भांति फैलती जा रही है। उपयुक्त वर-कन्या की तलाश ही इतना कटिन कार्य है कि हर मां-बाप, उसे उचित रूप से पूर्ण करने में अपने को असमर्थ पाते हैं। सामूहिक विवाह सम्मेलन उन्हें यह सुविधा प्रदान करता है कि एक ही स्थान पर जाकर वह उचित सम्बन्धों का चुनाव इच्छानुसार कर सकें।

दूसरी बात हमारी वैवाहिक रीति-रिवाज पालन करने की आती है। यदि आप जरा भी बौद्धिक दृष्टि से उन रीतियों पर गौर करेंगे तो आपको स्वयं उनके पालन करने में शर्म आने लगेगी। प्राचीन रीति-रिवाज उस समय की आवश्यकता थी, जो आज हमारे कंधे का भार बन गई हैं। पहले के युग में मशीन का अभाव था, जाने-आने के साधन सीमित थे, इसलिये कुछ रीतियां अपने आप बन गई और कुछ समय की दुरूहता को ध्यान में रखकर बनाई गई। जैसे विवाह में अधिक बराती ले जाना। उस समय मार्ग में चोर डाकुओं का अत्यन्त भय रहता था। जाने-आने के साधन घोड़े, ऊँट, पालकी, सांड़-साड़नी आदि ही थे, जिनसे अधिक दूरी तय कर पाना मुश्किल था। इसलिए लोग अधिक से अधिक संख्या में हथियारों से लैस होकर बारात ले जाते थे जिससे वर और वधू की माल सहित रक्षा

की जा सके। जरा सोचिए कि क्या आज का एक भी बाराती आपकी विपदा में आपकी रक्षा करने की हिम्मत रखता है? वह तो कोई ऐसी मुश्किल आने से पहले ही अपना कोट-पैंट उठाकर अपनी जान बचाने भाग निकलेगा। आपका क्या होता है इसे सोचने की उसे फुरसत ही नहीं होती। फिर आज के बाराती की उपयोगिता क्या है? वह तो केवल आपके ऊपर भार बनकर रह गया है। अधिकांश बाराती तो रास्ते भर ताश खेलने में और लड़की के दरवाजे पर तरह-तरह की माँगें पेश करने में ही अपना गौरव समझते हैं। आप सोचिए, आप उन्हें बारात ले जाकर कितने लोगों के कार्यों का नुकसान करते हैं उनके समय का दुरुपयोग करते हैं, उनकी शक्ति जो अपने व्यवसाय को बढ़ाने में सहायक हो सकती थी आपके साथ बारात में जाने से उसका ह्रास हो जाता है। उधर लड़की वालों को उनके ठहराने, खिलाने में कितना खर्च हो जाता है इसका अन्दाजा आप लगा ही नहीं सकते हैं।

दूसरी ओर ध्यान दीजिए तो विवाह की तैयारी में कितना समय लग जाता है। १५ दिन पहले से मेहमान आ जाते हैं, उनका भार, बुलाने, उठाने, ले जाने, पहुँचाने का भार। यह सब उनके लिए तो किसी हद तक ठीक है जिनके बड़े परिवार हैं किन्तु जहां सीमित परिवार हैं सीमित स्थान है उनके लिए कितनी पीड़ा की बात है, यह वही जानते हैं जो भुक्त भोगी हैं।

अब अपने रीति रिवाजों को लीजिए। महिलाएं १५ दिन पहले से लगन सगाई ले लेती हैं। उसके बाद के उनकी रीति देखिए मांगर माटी, बाहर से मिट्टी लाकर चूल्हा बनाना, फिर आंधी बेहर तूफान को एक छोटे से कुल्लड़ में कैद करना, चींटी, चींटे से लेकर मक्खी मच्छर तक को निमंत्रण देना। चक्की पीसना, कूटना आदि का ढोंग जिसे वह रीतियां कहती हैं। सब ऐसी रीतियां हैं जिसमें कोई दम नहीं रह गया है। पहले तो चक्की थी नहीं घर की चक्की में ही आटा पिसता था इसलिए घर की औरतें यह सब कार्य १५ दिन पहले प्रारम्भ कर देती थी। किन्तु आज उनका ढकोसला ही रह गया है। विज्ञान की देन से आज मनों आटा क्षण मात्र में पिस कर आ जाता है। साधन इतने बढ़ गए हैं कि आप क्षण मात्र में जो चाहें सब मिल जाता है। इसके अलावा पुरानी रीतियों के पालने में एक सबसे बड़ी मुश्किल जो मुझे मालूम पड़ती है वह यह कि शिक्षा ने तथा कपड़ों के फैशन ने दिखावा बढ़ा दिया है, जिससे महिलाओं में पहले जैसे कार्य करने की संगठित शक्ति का अभाव हो गया है। पुराने लोग चाहें जो अपनी शक्ति से कार्य कर ले जावें, किन्तु नई लड़कियां और बहुएँ अब उतना कार्य करने में अपने को असमर्थ पाती हैं। इसका कारण भी है जीवन क्षेत्र विस्तृत हो चुका है। पहले जहां खाना बनाना और खाना ही एक मात्र जीवन का ध्येय रहता था, वहां अब सिलाई

बुनाई, कढ़ाई, सिनेमा, घूमना आदि शौक भी इनमें शामिल हो गए हैं। अतः पहले जैसी लगन और शक्ति का अभाव सर्वत्र दिख रहा है। फिर प्राचीन पद्धति से विवाह में ही हम क्यों चिपके रहें? हमें नयी राह मिली है, जो सुलभ है और सही है, उसे ही हम क्यों न अपनावें!

कहीं-कहीं सुनने में आया कि लड़के परस्पर एक दूसरे को चिड़ाते हैं। इसलिये लड़के लोग इस सम्मेलन में शादी करने में हिचकिचाते हैं। मैं पूछती हूं कि जब वह स्वांग बनाकर घोड़े पर निकलते हैं और भोंड़े नाच उनके सामने होते रहते हैं शहर के लोग कौतुक भरी निगाहों से उनकी ओर देखते हैं, क्या तब उन्हें शर्म नहीं आती? क्या इसमें ही बारात की शान समझी जाती है? यह तो अपने मन की हीनता है जो आपको इस सम्मेलन में विवाह सम्पन्न कराने से रोकती है नहीं तो यह तो सर्वाधिक सुरूचिपूर्ण वैवाहिक पद्धति है जहां हजारों लोगों के बीच आपका सम्बन्ध होता है। हजारों लोगों के बीच आपको आर्शीवाद प्राप्त होता है। इस सम्मेलन में विवाह सम्पन्न कराकर आप सचमुच गौरव के पात्र बनेंगे।

मेरी तो हर बहन से यह प्रार्थना है कि वह पुरानी लीक को तोड़कर आगे बढ़ें। अपने घर के फिजूल खर्चे को रोककर सादगीपूर्ण वैवाहिक पद्धति स्वीकार करें और अपनी सदस्यता का परिचय देवें।

समाज के बन्धुओं से मेरा निवेदन है कि वह कुर्सी-पद और नाम के पीछे मत दौड़ें, उनका कार्य उन्हें कुर्सी-पद और नाम दिलाने में समर्थ रहेगा। वह इस वैवाहिक सम्मेलन के शुभ अवसर पर यह योजना बनावें कि हम विवाह में होने वाले फिजूल खर्चे को रोकेंगे तथा दिखावा बन्द कर शादी विवाह में होने वाले आलोचना को रोकेंगे। हमारा युवक वर्ग यदि संगठित होकर दृढ़ मत हो जावे तो क्रांति आने में देर नहीं लगेगी। इसी प्रकार समाज के समस्त बुजुर्गों से प्रार्थना है कि वह मृतक भोज के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द करें। मैं यह नहीं कहती कि आप मृतक भोज करने वालों को किसी प्रकार दण्ड दीजिये या जबर्दस्ती कीजिए। मैं तो आपसे केवल इतना ही आग्रह करूंगी कि आप अपने मन में संकल्प तो लेवें कि आप कहीं भी मृतक भोज में नहीं जायेंगे तो क्रमशः बारात में बारातियों की संख्या भी कम होती जाएगी। शहर की बारात की बात मैं नहीं कहती, मैं उन बारातों की बात कर रही हूं जो बाहर जाती हैं।

सुधार तो सभी करना चाहते हैं परन्तु अपवाद से भय भी खाते हैं। यदि युवाशक्ति और प्रौढ़ अनुभव मिलकर कार्य करें तो असंभव संभव होने में देर नहीं।

हमारी विचारणीय समस्याएं

—बद्रीप्रसाद अग्रवाल
अध्यक्ष म० प्र० अग्रवाल महासभा, जबलपुर

अधिक से अधिक संख्या में सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित करबाना समाज को एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। इस वर्ष मध्य प्रदेश अग्रवाल महासभा द्वारा दिये गये दोनों नये नारों का जोर-शोर से प्रचार करें। अपने समस्त पत्र-व्यवहार में इन शब्दों को अवश्य कहीं न कहीं स्थान दें। लिफाफों पर "दिखावा बन्द हो" और "मृतक भोज बन्द हो" नारे लिखकर कार्य क्षेत्र व्यापक बनावें। हमें शांति से कार्य करना है। कानून यदि बनाया जाता है तो उसका उल्लंघन होता है। हमें कानून नहीं बनाना है। शांतिपूर्ण तरीके से समझाना है और उसे प्रेरित कर अपने आदर्श मनाने की प्रेरणा देना है और जबरदस्ती नहीं करें। कोई भी नया कार्य प्रारम्भ होने पर उसका खूब विरोध होता है पर यदि कुछ लोग उसका अनुसरण करने लगते हैं तो पीछे से टांग खींचने वाले भी उसके कायल हो जाते हैं। दिखावे की रस्म ने लोगों में प्रतिस्पर्धा की भावना को जन्म दिया है। इस झूठी शान को तोड़ना ही होगा। दिखावे समाप्त हो जाने से दहेज की प्रथा भी धीरे-धीरे समाप्त होने लगेगी। इसी प्रकार मृतक के शोक संतप्त परिवार को एक ओर जहाँ सांत्वना और स्नेह की आवश्यकता होती है वहां दूसरी ओर उस पर इस भोज का बोझ मिटाना ही होगा। धर्म के नाम पर कुछ प्राणियों को खिला दीजिये पर समाज के सब लोगों को बुलाना और खिलाना बन्द होना चाहिये। आपसे मेरी एक ही प्रार्थना है कि आप सिर्फ यह भर तय कर लें कि आप उस परिवार को सांत्वना भर देने जायेंगे उसके भोज में सम्मिलित नहीं होंगे तो इस मृतक भोज रुपी राक्षस का नाश अपने आप हो जायेगा।

दूसरी समस्या समाज के सभी लोगों में सम्बन्ध, जानकारी और परिचय से सम्बन्धित है। जबलपुर में रहने वाले भाई को इन्दौर वाले की जानकारी नहीं और इन्दौर वाले को जबलपुर और रायपुर की जानकारी नहीं होती। इसके लिए हमें

सतत प्रयास करने होंगे। हमें सभी स्थानीय संगठनों की जानकारी प्राप्त करनी होगी तथा उसे संकलित कर प्रकाशित करना होगा जिससे सबको एक दूसरे के बारे में मालूम हो सके। यह जानकारी शादी विवाह के लिए भी बहुत लाभदायक सिद्ध होगी। इस कमी को पूरा कर इसको समस्त समाज तक पहुंचाया जाना आवश्यक है।

बेरोजगारी की समस्या पर भी हमारा ध्यान जाता है। समाज में बहुत अधिक विषमता है। एक ओर धनी परिवार हें पर एक बहुत बड़ी सख्या में साधारण और बेरोजगार परिवार भी हमारे अंग हैं। किसी तरह अपनी आजीविका तो अधिकांश लोग चला लेते हैं पर जो बेरोजगार हैं और आजीविका के लिये दूसरों के ऊपर आश्रित हैं ऐसे लोगों के ऊपर भी हमें ध्यान केन्द्रित करना होगा। व्यवसायी उद्योगपति और धनिक वर्ग से मेरी अपील है कि वे इनकी ओर भी ध्यान दें। आखिर वे हमारे ही भाई हैं। हमारे आदि पुरुष के ही अनुयायी है। यदि वे सोच लें कि उनके यहाँ रिक्त होने वाले स्थानों में वे अग्रवाल भाइयों को ही प्राथमिकता देंगे तो हमारी समस्या चुटकी मारते ही हल हो सकती है। कुछ ऐसे उद्योग भी सहकारिता के सांचे में खोले जा सकते हैं जिनमें समस्त स्वजातीय बन्धुओं को ही रोजगार दिया जा सके। जातीय बैंक भी इस दिशा में काफी सहायक सिद्ध हो सकते हैं। दिल्ली में बहुत समय से एक ऐसा बैंक कार्यरत है और उसने अभी तक बहुत से सजातीय बंधुओं को आसान दर पर कर्ज देकर उनकी सहायता की है और इस कर्ज से अनेकों बन्धु सफलता प्राप्त कर चुके हैं। इन्दौर में भी पिछले कुछ समय से ऐसा ही बैंक कार्यरत है। हमें प्रयास करना चाहिए कि इस तरह से अधिक से अधिक बैंक खोले जायें और आवश्यकतानुसार जरूरत मन्दों को साख शर्तों पर कर्ज दिये जायें और उन्हें अपनी निर्धनता से लड़ने का अवसर दिया जाये।

महिलाओं में पिछले कुछ वर्षों में आशातीत प्रगति हुई है। परदे और घूंघट से निकलकर समाज आगे बढ़ा है। कुछ पुराने विचार वाले अभी भी महिलाओं को स्वतंत्रता नहीं देना चाहते पर धीरे-धीरे उनका मनोबल टूटता जा रहा है और महिलायें आगे बढ़ रही हैं। पहिले अशिक्षा का बोलवाला था पर ज्यों ज्यों शिक्षा का प्रसार बढ़ रहा है महिलायें हर क्षेत्र में आगे आती हैं उनका संगठन आवश्यक है उसे अवश्य यथोचित स्थान दिया जाना चहिऐ प्रादेशिक संगठन में हमने उनके लिये तीन स्थान सुरक्षित रखे हैं और शायद और अधिक स्थान भी उनको दिये जा सकते हैं, यह उनके ऊपर निर्भर करता है। ऐसा भी देखा गया है कि शिक्षा के क्षेत्र में अधिक प्रगति महिलाओं के लिये बाधक हो रही हैं। अक्सर ही हमारे ध्यान में ऐसी कन्याओं के उदाहरण आते हैं जो उचित वर न मिलनेके कारण आगे बढ़ती ही जाती हैं और दिनों-दिन उच्च शिक्षा से उनके विवाह की समस्यायें बढ़ती जाती हैं।

यदि प्रगति का नाम शिक्षा से है तो हमें इस पर ध्यान देना होगा। यदि अधिक ज्ञान उपार्जन कर महिलायें प्रगति कर सकें, घरों से बाहर निकलकर उद्योग धंधे और व्यवसाय के सामने आ सकें, अपने पैरों पर खड़ी हो सकें तो यह बहुत उत्तम बात है, पर अभी इस ओर कुछ समय लगेगा, तब तक हमें शिक्षा और विवाह का सम्बन्ध भी ध्यान में रखना होगा। प्रगति का कोई विरोधी नहीं होता, मैं तो चाहता हूं कि महिलाओं को पूर्ण स्थान और प्रतिनिधित्व दिया जावे और उन्हें आगे बढ़ने का पूर्ण अवसर प्राप्त हो।

महाराजा अग्रसेन और शोध कार्य:—अग्रकुल संस्थापक महाराजअग्रसैन जी का इतिहास भी अभी अपूर्ण है। अभी तक हुए शोध कार्य से यह प्रायः निश्चित सा हो गया है कि अग्रोहा महाराजअग्रसेन की राजधानी थी और उनके राज्यकाल में समृद्धिशाली अग्रोहा में १ लाख अग्रवाल परिवार बसते थे। अतएव सभी अग्रवाल उनकी संतान न होकर उनकी पालक संतान थे और उन्हीं सब परिवारों से अग्र कुल का संबंध है। इसी प्रकार गोत्र भी उसके पुत्रों के न होकर इन्हीं संपन्न प्रमुख परिवारों में से स्थापित किये गये होंगे। यदि सभी गोत्र उनकी संतान के माने जायें तो यह बड़ा हास्यस्पद लगता है कि आगे का कुल इन्हीं सब भाई बहिनों के परस्पर बिवाह संबंध से प्रारंभ हुआ। इन्हीं सब प्रश्नों मे शोध कार्य की आवश्यकता अधिक हो गई हैं। प्रसन्नता का विषय है कि समाजिक विद्वानों का ध्यान इस ओर गया है और वे इस कार्य में रूचि लेकर इसे बड़ाकर नई नई अनेकों मान्यताओं को तर्कों के आधार पर प्रस्तुत कर रहे हैं। केवल किवदंतियों के आधार पर हम जीवित नहीं रह सकते, हमें स्वयं ही स्पष्टवादी होना पड़ेगा और प्राप्त विभिन्न सूत्रों के आधार पर इतिहास के तले बैठकर खोज करनी होगी। मैं समाज के अन्य विद्वानों का भी ध्यान इस ओर आकृष्ट कर उन्हें भी इस चुनौती के लिये तैयार करना चाहूँगा जिससे हमारे सामने सही तथ्य प्रस्तुत हो सकें। तथ्य कड़वे भी हो सकते हैं, हमें उससे विचलित नहीं होना चाहिये और उन पर मनन कर कसौटी पर कसना होगा।

इसी प्रकार महाराज श्री के चित्र के विषय में भी बहुत विवाद हैं? उनका अभी तक कोई अधिकृत चित्र नहीं। अखिल भारतीय स्तर पर इस कार्य को लेकर उनका एक चित्र स्वीकार किया जाना चाहिये। अभी तक जो भी उपलब्ध चित्र हैं उनमें उनके मुकुट (पगड़ी) में कंलगी का होना मुगल काल की देन समझी जा रही है। महाराज अग्रसेन जी का काल ५००० वर्ष पुराना माना जाता है। उस काल में विश्वकर्मा आदि के जो भी चित्र उपलब्ध हैं उनमें किसी भी जगह कंलगी का प्रयोग नहीं है और यह सिर्फ मुगल काल में ही प्रारम्भ हुई है। अतएव इस पर भी विचार आवश्यक है और कंलगी को चित्र से निकालना चाहिये।

दूसरा महत्वपूर्ण विषय हमारी महाराजाधिराज अग्रसेन जयंती महौत्सब से संबंधित हैं। प्रतिवर्ष हम कुंवार सुदी प्रतिपदा को महाराजा जी के जन्मोत्सव से संबंधित उनकी जयंती बड़े धूमधाम से सारे भारतवर्ष में मनाते आ रहे हैं। यद्धपि कि जन्म तिथि के विषय में कुछ विवाद हैं पर फिर भी उसे हमें मान्यता प्रदान कर देना चाहिये और जयंती को संगठन के एक विशिष्ट कार्यक्रम के रूप में प्रमुखता देनी चाहिये। जयंती के विषय में मेरे ठोस कार्यक्रम निम्नलिखित हैं:—

१—हवन पूजन
२—महाराजा अग्रसेन जी की झाँकी तथा शोभा यात्रा
३—जयन्ती के दिन सामाजिक और व्यवसायिक अवकाश
४—स्मृति ग्रंथ या पत्रिका प्रकाशन
५—संगठन कार्य (सामाजिक)
६—सामाजिक कल्याणकारी योजनायें, सामूहिक विवाह सम्मेलन की योज़ना
७—स्थानीय, जिला, क्षेत्रीय, प्रदेशीय तथा अखिल भारतीय संगठन
८—विभिन्न मनोरंजन कार्यक्रम
९—सभा-पारस्परिक चर्चायें, गोष्ठी
१०—मेला तथा घरेलू प्रदर्शनी, महिला संगठन तथा चर्चा।

सार्वजनिक अवकाश—आज सभी धर्मावलंवियों को उनके आदि पुरुष की जयन्ती मनाने की पूर्ण छूट है और उस दिन उन्हें सरकारी अवकाश प्राप्त होता है पर हमें महाराजा अग्रसेन जयन्ती पर यह सुविधा अभी प्राप्त नहीं है। प्रदेश और देश के समस्त नेतागणों से मिलकर हमें इसकी पहल करना चाहिए और उन्हें प्रेरित कर उस दिन पूरे भारत में सार्वजनिक अवकाश के लिए एक आन्दोलन चलाना चाहिए। हमारी आवाज को विभिन्न प्रादेशिक और देशीय महासभाओं द्वारा सरकार तक पहुंचाना होगा। मैं तो कहूँगा कि प्रदेशीय महासभाएँ पोस्ट कार्ड छपवाने की व्यवस्था करें तो सभी सजातीय बन्धुओं को बाटें और उन पोस्टकार्डों के द्वारा राष्ट्रपति और मुख्यमन्त्रियों से अपील करें कि वे अगले वर्ष से जयन्ती के दिन सार्वजनिक अवकाश घोषित करें।

अग्रोहा बसाओ—हमारा इतिहास अभी अग्रोहा के नीचे दबा है। अग्रोहा की खुदाई के समय बहुत सी नई वस्तुओं पर प्रकाश पड़ा है। दुख की बात है कि सरकार इस विषय में अब मौन है। पुरातत्व का ध्यान इस ओर दिलाया जाना चाहिए और आवश्यक कदम उठाना चाहिये। समाज की ओर से भी एक कोष की स्थापना हो जिससे इस कार्य को सहायता मिल सके। पिछले दिनों श्री लक्ष्मीनारायण जी दिल्ली वालों ने प्रयास कर वहां कुछ जमीन खरीदकर सार्वजनिक स्कूल और धर्मशाला के लिए भी कोशिश की थी। सबका सहयोग इस कार्य को पूर्ण कर सकता है। इसमें हमें सक्रिय होना होगा।

कारटून कोना—

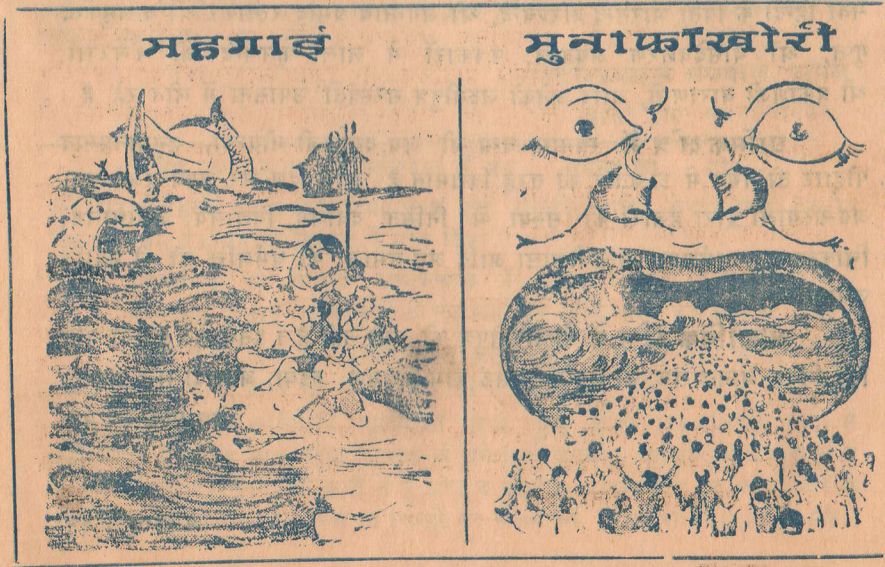

राष्ट्रोत्थान में अग्र-समाज का योग

अग्रवाल समाज हमेशा राष्ट्रोत्थान के मार्ग में सबसे अनुग्रणी समाज माना गया है। पूर्वकाल का जहाँ तक सवाल है उसका तो विस्तृत विवरण है और वह अपूर्ण भी है। लेकिन वर्तमानकाल में अग्रवाल समाज राजनैतिक, बौद्धिक, साहित्यिक धार्मिक एवम् सामाजिक आदि किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। अगर उनका पूर्ण विवरण छापा जाय तो ग्रन्थ के ग्रन्थ तैयार हो जायेंगे। यहाँ हम ऐसे महापुरुषों में से कुछ के केवल नाम ही प्रस्तुत कर रहे हैं। उनकी पूर्ण जानकारी हम यदा कदा देते रहे हैं और देते रहेंगे।

बौद्धिक क्षेत्र में अनेकों अग्र-महापुरुषों ने अपने प्रयासों मे राष्ट्र का मस्तक ऊँचा किया है। जिनमें भारत रत्न डा० भगवानदास डी० लिट, सर गंगाराम जी पंजाब, चीफ जस्टिस सर शादीलाल के नाम प्रमुख रूप से आते हैं।

राजनैतिक क्षेत्र में तो भण्डार भरा है कहाँ तक लिखा जाय। जिनमें पंजाब केसरी लाला लाजपतिराय त्याग मूर्ति सेठ जमनालाल बजाज, लोहपुरुष डा० राम मनोहर लोहिया, श्री नरसिंह दास जबलपुर, ला० रामनाथ जी देहली कर्मवीर लादूरामजी गोंदिया, आचार्य जुगल किशोर जी, श्री कमल नयनजी बजाज, श्री शिव प्रसाद गुप्त वाराणसी, श्री प्यारेलालजी कानपुर, श्री गोयल जो आगरा, आदि एक नहीं हजारों ऐसे स्वतन्त्रता सैनानी हुए हैं जिन्होंने तन-मन-धन के साथ साथ अपने अपने प्राण तक भी अर्पण कर दिये।

साहित्यिक क्षेत्र में अगर यह कहा जाय कि वैश्य कर्म के साथ साहित्य सर्जन भी हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है तो अतेशयोक्ति नहीं होगी। साहित्यिक सेवा हिन्दी के पिता भारतेन्दु हरिश्चन्द, श्री जगन्नाथ प्रसाद रत्नाकर श्री बालमुकन्द गुप्त, श्री वासदेवशरण अग्रवाल, पत्रकारों में लाला फूलचन्द जी कलकत्ता, श्री प्रकाशजी वाराणसी, आदि अनेकों लक्ष्मीपुत्र सरस्वती उपासना में लीन रहे हैं।

धार्मिक क्षेत्र में स्वनाम धन्य जी जय दयालजी गोयन्का, हनुमानप्रसाद पोद्दार तो गगन में ध्रुवतारे की तरह विद्यमान है इनके देश भर अग्रबन्धुओं एवम् अग्र-संस्थाओं द्वारा हजारों की संख्या में निर्मित देवालय, विद्यालय, अनाथालय, चिकित्सालय, धर्मशाला अतिथीशाला आदि अग्र-समाज की धर्मशक्ति की की ज्योति जगमगा रही है।

औद्योगिक क्षेत्र में भी लक्ष्मीपुत्र की कमी नहीं है। इनमें सेठ कमला पति सिंहानिया आनन्दराय जी जैपुरिया, सेठ राम नरायण रुइया, आनन्दीलाल पोद्दार,

शेष पृष्ठ ३३ पर

नाम के आगे अग्रवाल लिखना ही उपयुक्त

आज संसार हर क्षेत्र में तीव्रगति से प्रगति करता जा रहा है और आगे बढ़ता जा रहा है—चाहे वह कोई भी क्षेत्र हो, राजनैतिक, शेक्षिणिक, व्यापारिक, औद्योगिक, साहित्यक, सामाजिक व परिचयात्मक। इस उहापोह में किसे इतना समय है कि वह यह जान पाये कि हम कौन थे—कहां के हैं—और हमारा अतीत कैसा था। सामाजिकजन 'जागरण' के कारण ही आज का सामाजिक प्राणी अपने को समाज का घटक मानता है और समाज को चहल—पहल और गितिविधियों के कारण अपने को "समाज" में कुछ लेन मानता है। अन्यथा वह (प्राणी) दूर होता। जब समाज के घटक, अंग प्राणी की यह हालत है तब समाज में जाति, उपजाति, दसा, बीसा, पचा, का भेदभाव, और क्षेत्रयता की भावना जैसे राजस्थानी, पंजाबी, गुजरती, बुन्देलखंडी, मालवी, आदि की विभक्तीकरण की कामनायें आज भी अग्रवाल समाज को एकीकरण के पथ में बाधाये बनी हैं। सबसे भारी गम इस बात का है कि बहुत से अग्रवाल समाज के लोग अपने आप को अग्रवाल लिखते तक नहीं हैं—वे नाम के आगे गोत्र, चौधरी, निकसी का स्थान, जैसे गोयल, मित्तल, जिंदल, मेहाड़िया चौधरी पोद्दार, बजाज आदि लिखते है! इससे आज के युवक विशेषकर नई पोढ़ी यह भी नहीं समझ पाती की ये लोग अग्रवाल बन्धु हैं। अस्तु अजिता भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन के अवसर पर इस आशय का प्रस्ताव पारित कर सभी अग्रवाल बंधुओं से निवेदन किया जावे कि वे अपने आप को "अग्रवाल" लिखकर एकता, और विभवतीकरण की भावना दूर कर अग्रवाल शब्द को अपनाकर जतियता के महत्व को प्रतिपादित करेंगे तथा सभी अग्रबाल बन्धु जाति उपजाति, दसा, बीसा, पचा, और क्षेत्रियता की सीमा को तोड़कर अपने आप को एक माला में पीरोकर अपने स्वयं के जागरण और समाज संगठन शक्ती का परिचय देंगे—की प्रार्थना की जावे।

—**नरेन्द्रमोहन अग्रवाल 'पागल'**
गाँधी चौक, सदर, नागपुर

शेष पृष्ठ ३२ का—राष्ट्रोत्थान में अग्र समाज का योग

श्री श्रीराय देहली, आदि अनेकों महापुरुष हुए जिन्होंने उद्योग धन्धों द्वारा राष्ट्रीय विकास एवम् बेरोज़गारी विनास में योग दिया है।

किन-किन को गिनायें राष्ट्रोत्थान में अग्रसर अग्रदूतों के नाम।
क्या-क्या गिनाएँ अग्रबन्धुओं के तन मन धन अर्पण करने का काम॥

ये तो केवल कुछ गगनचुम्बी महान् आत्माओं के नाम हैं नीम के पत्थरों को कौन याद करता है उनमें भी अनेकों ऐसे जो किसी से कम नहीं।

यह विवरण स्वर्गवासी महात्माओं में से कुछ के हैं पूरा इतिहास पन्नों में नहीं ग्रन्थों में भी अप्राप्त रहेगा। एक के अनेक के अनुसार वर्तमान में प्रत्येक क्षेत्र मे अग्रसर अग्र-महापुरुषों की कमी न है और न रहेगी। आवश्यकता इन महापुरुषों के कार्यकलापों के मनन की, उनके पद चिन्हों पर चलने की, ताकि राष्ट्रउत्थान हो सके।

कारटून कोना—

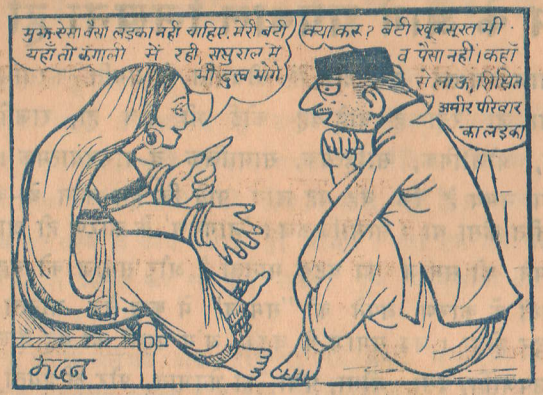

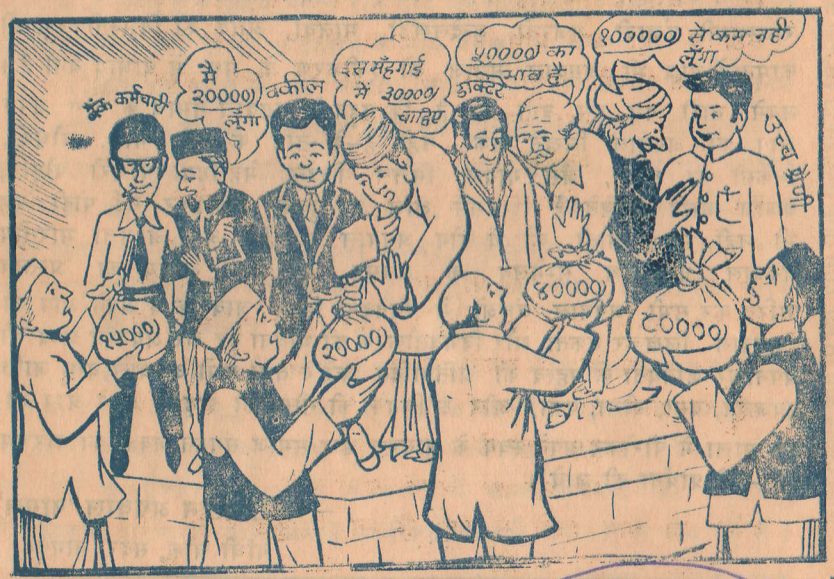

दस स्थानों पर जल प्राप्ति के लिए चार-चार हाथ पृथ्वी खोदने से जल प्राप्त नहीं होता, यदि एक ही जगह पर ४० हाथ खोदा जाय तो उस कुऐ से लाखों की प्यास बुझ सकती है। अपने लक्ष पर पूर्ण ही परम शान्ति का साधन है।

.....आओ आंचल गीला करलो

उस साल प्राण तुम रूठी जब
उस दिन भी ऐसी होली थी
उस पार आम की डाली पर, उस दिन भी कोयल बोली थी

× × × ×

फिर आयी होली आज प्रिये, फिर देखो, कोयल कूक उठी
फिर अमराई बौराई है, अन्तर में कैसी हूक उठी
रूठी न रहो अब प्राण मेरी आओ आंचल गीला करलो
इन लाल-गुलाबी गालों को इन हाथों को पीला करलो।
मेरा अपराध भला क्या था
वह मौसम की बे अदवी थी
जब रंग भरी पिचकारी से भीगी फूलों की चोली थी

× × × ×

यह रूप चांद पर भारी था अधरों पर बिखरी लाली थी।
हर अंग बसन्ती रंग पगा उस पर यह उमरिया बाली थी
वह रूप रशि की उजियाली, जादू सा मन में घोल गयी
वह नील-झील सी दो आंखें जग के सब बन्धन खोल गयी
तुम सतरंगी चूनर ओढ़े—
थीं छत पर अलकें खोल खड़ी
दर्पण को थामे हाथों में मन ही मन में कुछ बोली थी।

+ + + ×

मौसम पर मस्ती छायी थी फूलों ने गंध लुटायी थी
ऊषा भी अपनी झोली में, केसर कुंकुम भर लायी थी
हर ओर सुहागिन की डोली, नैहर से पिय के गाव मुड़ी
सन्ध्या ने गाकर मिलन- गीत, मन की बाती उकसायी थी
आंखों का कजरा देख देख
सपनों का बजरा डोल गया
बे-बस मस्ती के आलम में, अन्जान नजिया डोली थी

÷

—दुलीचन्द शशी, हैदराबाद

तलाश

—जगमोहन

नहीं यह कोई कहानी नहीं ज्वलन्त सत्य हैं और दूसरे अनुभूत सत्य यह हैं कि आप उन पर विश्वास नहीं करेंगे ।

आप मेरी ओर ऐसे क्यों देख रहे हैं । क्या कोई गलत बात कह दी है मैंने··· विश्वास कीजिए, आपको हेय दृष्टि से देखने की तो में कल्पना भी नहीं कर सकता हाँ' मेरी विवशता यह है कि आपके सामने स्थिति स्पष्ट करते समय मुझे मानसिक तनावों के दौर से गुजरना पड़ता है । इतनी उलझनें सामने आ जाती हैं कि···और कटु सत्य तो यह है कि आपसे अपनी व्यथा कहने से मुझे कोई लाभ नहीं होगा । फिर भी···बात चली है तो मैं सहज रूप में आपसे यह कहकर कि आपके इस भीड़ भरे संसार में मैं कहीं खो गया हूं···मेरी इस भटकन की वेदना को आप कमी महसूस नहीं कर सकते, अपनी बात समाप्त करता हूं ।

नही नहीं आपको उत्तेजित करने या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आपका अहंकार जगानें का भी मेरा कतई इरादा नहीं । स्पष्ट वादिता के लिए क्षमा, साफ बात तो यह है कि मैंने आपको खूब ठोक बजाकर देख लिया है । मेरी आंखों की भाषा तो दूर मेरे चेहरे पर बनती मिटती रेखाओं के ज्यामितीय चित्र भी तो आप अबतक समझ नहीं पाए ।

हुई नहीं बात···आपकी आंखों का यह नुकीलापन इस बात का प्रमाण है कि आप मेरी ओर तुच्छता से देख रहे हैं आपसे अपने बारे में जो कुछ कह रहा हूँ, वह मूल्यहीन है । लेकिन मैं आपसे फिर कह रहा हूं कि किसी प्रकार के विवाद में आपसे उलझने का मेरा कोई इरादा नहीं है । इतना तो आप भी समझते होंगे कि जो स्वयं की तलाश में भटक रहा हो, वह दूसरों से क्यों उलझेगा ।

दरअसल, मेरी वेदना तो यह है कि मैं दुविधा में फंस गया हूँ न निगलते बन रहा है न उगलते । न जाने कौन-सा वह क्षण था जब मुझे इस बात का भान हुआ कि मैं खो गया हूँ । टुकड़े-टुकड़े होकर अस्तित्वहीन हो गया हूँ। तब से ही मेरे मानस में आग का एक दरिया-सा लहरा रहा है । मेरा दिन-रात का चैन हराम

हो गया है । लगता है कि किसी ने निरन्तर दहकते अंगारों पर लेटे रहने की सजा दे डाली है ।

क्या गुनाह है मेरा ? क्या आप बता सकते हैं ?

यही तो परेशानी है । आप मेरी किसी बात पर विश्वास नहीं करते । मैं इसमें कर भी क्या सकता हुं ।

इतना तो मैं जानता हुं कि अपनी इस तलाश की भटकन में मुझे जिस दिशा से भी आशा की एक किरण दिखाई दी, मैं उत्साह से उसी ओर लपका··· लेकिन यह कहते हुए मेरा मन बहुत बेझिल है कि मेरे हाथ अब तक केवल निराशा ही लगी है । हाथ मलते हुए ही वापस लौटा हुं ।

आप यह भी नहीं मानेंगे कि अपनी इस तलाश की भटकन में मैं लहूलुहान हो चुका हूँ । कितनी ही बार मेरी आंखों से खून के आंसू टपक चुके हैं । बुरा मत मानिये दोष इसमें आपका नही, आदमी के सकुचित होते दृष्टि कोण का है । आज की दृष्टि का दायरा केवल बाहरी परिवेश तक सीमित रह गया है ।

कभी–कभी सोचता हुं– मुझे यह क्या हो गया है ? मैं क्यों खो गया हुं ? कोई बच्चा तो नहीं हुं । लेकिन यह प्रश्न जिस चार दीवारी के बीच से उठते हैं, उसी से सिर पीटकर वापस लौट आते हैं···मैं मर्महित में हो उठता हुं.. आंखों के सामने पनीले परदे कांपने लगते हैं··· अन्दर का ज्वार भाटा मुझे अपने आगोश में ले लेता है । और मैं···मैं जितना शीघ्र हो सके इस वेदना से निजात पाना चाहता हूं । लेकिन यह ध्रुव सत्य है कि अपने को तलाश किए बिना निजात मिल नहीं सकती । इसीलिए स्वयं की तलाश का यह आंतरिक अभिशाप और मेरा जीवन दोनों एक दूसरे के पूरक हो गए हैं ।

अब की नहीं यह काफी समय पहले की बात है । अपनी तलाश की इसी भटकन में मैं एक बार एक लड़की से टकरा गया था । वह मुस्करायी मैंने सहज अनुमान लगाया कि शायद इसको मेरे बारे में मालूम है । मेंने उसकी आंखों में आंखें डालकर (वास्तव में उसकी आंखें बढ़ी थीं) पूछा कि क्या तुमने मुझे कहीं देखा है ? प्रत्युत्तर में उसने; जैसे कली चटकती है, मीठी मुस्कान से कहा—हां तुम मेरे हृदय में हो ।

मेरी कनपटियां लाल हो गईं । नितांत असंगत स्थान था यह मेरे होने का । कुछ क्षण तो मैं उसकी ओर विस्मित सा देखता रह गया । और जब कुछ नहीं समझ पाया तो उस पर विश्वास करना ही पड़ा । बेचैन व्यक्ति को तो थोड़ी–सी राहत भी बहुत होती है । और, वैसे भी यह स्थान मेरे लिए अब तक अछूता ही था । मुझे विश्वास हो गया कि मैं मिल गया हूँ अब में अपने आप में पूर्ण था । सहज था ।

लेकिन···लेकिन फिर वही रिपीटीशन हुआ। तीन–चार महीने बाद एक दिन उस लड़की ने पर्याप्त उदास स्वर में कहाकि उसके माता–पिता ने उसकी शादी कहीं और तय कर दी है। अब वह मुझसे नहीं मिला करेगी। मैं ठगा–सा उसकी ओर देखता रह गया। मुझे लग रहा था कि वह लड़की मुझसे दूर····काफी दूर चली गई है। जैसे मेरा उससे कोई परिचय ही नहीं था। जैसे कुछ पूर्व मैंने कोई सपना देखा था··· में अब फिर अकेला था सार भूम टूटकर बिखर चुका था। टूटे हुए टुकड़े मेरे मानस में छिद रहे थे।

लड़की की पलकें झुक गईं। मेरे मुंह से एक गहरी निःश्वास निकली।

मैं फिर खो गया। भूमका ही सही, एक खिलौना मेरे हाथ में था, जो मुझसे छिन गया।

क्षमा करिए, मेरी इस रामकहानी से आप बोर हो रहे होंगे। सोच रहे होंगे कि मेरा सिर फिर गया है। मैं बहकी–बहकी बातें करके आपका मूल्यवान समय नष्ट कर रहा हूं। पांच फुटा आदमी आपके सामने खुश होकर कह रहा है कि वह खो गया है; पागलपन की हद है?

लीजिए, में चुप हुआ जाता हुं। आप कहिए। स्पष्ट कहिए। लेकिन एक निवेदन और सुन लीजिए–मैं आपके सामने कोई स्पष्टीकरण नहीं रख रहा। अपनी बात मनवाने का भी मेरा कतई आग्रह नहीं है। और समझाया किसे जाए, आपको? अनुमति हो तो दो मिनट ठहाका मारकर हंस लूं···?

अरे....आप मेरी ओर इस तरह क्यों देख रहे हैं? मैं भी आपकी तरह एक साधारण व्यक्ति हुं। फिर यह सन्देहात्मक दृष्टि क्यों? रहस्य की बात केवल इतनी है कि मैं आपकी भाषा से बिदकता हुं और आप मेरी भाषा समझना नहीं चाहते।

मैं देख रहा हूँ–अब आप काफी गंभीर मुद्रा में आ गए हैं। अपनी नजरों से मुझे तोल रहे हैं और शायद कोई मनोवैज्ञनिक हल भी आपके मस्तिष्क में आ गया है।

एक मिनट और–कुछ माह पहले की बात है! अपनी तलाश की बेचैनी को सीने से लगाए मैं सड़क पार कर रहा था कि यकायक बीच सड़क पर किसी ने मेरी बाँह पकड़ ली और तेजी से खींचकर फुटपाथ पर ले गया। वह ट्रैफिक पुलिस का इंसपेक्टर था। में कुछ सहज होऊं कि वह गुर्राकर बोला–क्या मरना चाहते हो? लाल बत्ती भी दिखाई नहीं देती? इधर से कार, उधर से बस ···

मैं कोई उत्तर न दे सका। बस उसकी ओर देखता रह गया। हां, मेरी आंखों की मूक भाषा ने उससे इतना स्पष्ट कह दिया था कि जो अपनी तलाश में

भटक रहा हो, उसके लिए जीने–मरने में कोई अंतर नहीं होता।

लेकिन वह इस को कहाँ समझ पाया?

हां, आपके बारे में मैंने सोलह आने सच अनुमान लगाया है। आपने मेरे सामने दर्पण रख दिया है। भ्रम निवारण के लिए। अब अपनी कहूँ क्या समझते हैं आप अपने आपको आपका यह विश्वास कि दर्पण में अपना प्रतिबिम्बि देख कर मैं यह मान लूंगा कि मैं खोया नहीं हूँ, नितांत सतही है।

लेकिन चलिए, यह भी सही। आज आपकी सांत्वना के लिए मैं दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देख रहा हूं····· और इस बार भी मैं मीलों पीछे चला गया हूँ। वहाँ, जहाँ पर विभिन्न रंगों के हंसते मुस्कराते फूल खिल रहे हैं। सुगन्धमयी वायु अछूते यौवन–सी अटखेलियां कर रही है·····बताइए है न मीलों पीछे ऐसा ही? मैं झूठ तो नहीं बोल रहा? लेकिन रुकिए, मेरी आँखों में आंखें डालकर इस मर्मान्तक सत्य को गंभीरता से सुन लीजिए कि यह हकीकत नहीं, स्वप्न है? और इस स्वप्न के गवाह आप हैं।

अरे आप तो चौंक गए। कम से-कम इस एक सत्य पर तो विश्वास कर लीजिए।

मैं फिर बहक गया। कहना तो मैं केवल यह चाहता हूँ कि आप स्वप्न के अस्तित्व को तो मानने को तैयार हैं, हकीकत को नहीं। अरे, नहीं भई, मैं तो आपसे सिर्फ इतना ही पूछना चाहता हूं कि क्या मैं खोया नहीं हूँ?

सही बात है। मेरा दिमाग फिर गया है। नहीं तो मैं अपनी तलाश में भटकता ही क्यों? फिर भी.....आपसे एक प्रश्न अवश्य करूँगा कि आपको अपने सोने का अहसास अब तक क्यों नहीं हुआ?

मैं देख रहा हूँ–आपका मन उखड़ रहा है। आपकी आंखें मुझसे बचने के लिए इधर उधर सहारा ढूँढ रही हैं काश कि इस समय कोई आ जाए और आप औपचारिक मुस्कान के साथ मुझसे विदा लेकर राहत की सांस खींच लें·····और मेरे चले जाने के बाद अपना माथा ठोंकते हुए कहें–न जाने किस मनहूस का मुंह देखकर आज सवेरे उठे थे। आधा घंटा हो गया बकवास सुनते–सुनते।

लेकिन इससे पहले कि ऐसी स्थिति आए यदि आप मुझे दो मिनट दें तो मैं आपको यह भी बता दूँ कि जब मैं कुछ समय के लिए स्वयं को मिल भी जाया करता था, पूर्ण सचाई के साथ वह मर्मान्तक स्मरण है। वह, वह समय था जब मैं अपनी तलाश और नौकरी की तलाश, इन दो तलाशों के बीच बंटा हुआ था। उस समय सारे दिन की अपने थकान अपने चेहरे पर लिए शाम को घर लौटकर अपने आंगन में खड़ा होता तो मुझे अपने घर का प्रत्येक कोना खोया-खोया–सा नजर आता। लगता

यह कोने भी मेरी वेदना से व्यथित हैं और जब मैं गहरी निःश्वास छोड़कर, गरदन उठाकर ऊपर देखता तो लगता खाली पेट वाला यह मकान भर भराकार गिर रहा है.. मेरे अंदर समा रहा है। पहले से ही भारी मन और भारी हो जाता। मस्तिष्क में काली–कालीं आंधियारी चलने लगीं। स्थिति से बचने के लिए मैं बोझिल कदमों से घर से बाहर निकलने के लिये कदम बढ़ाता कि अंधेरे को चीरती एक स्नेह–किरण मेरे मस्तिष्क को चूम लेती। रसोई से माँ का स्वर आता–पप्पी, खाना खाले। इस स्वर के साथ ही बोझ की नदियों का बहाव पीछे की और लौटने लगता। बढ़ते कदम रुक जाते। मैं मुड़कर देखता तो लगता– घर की प्रत्येक दीवार मातृ-स्नेह से मुस्कराकर मुझे अपने वक्ष से लगाना चाहती है। मैं इकाई न रहकर इस घर का अभिन्न अंग बन गया हू। मां की ओंर देखता, वह मेरी ओर और एक स्नेह–डोर हम दोनों को एकाकार कर देती है।

लेकिन·····लेकिन अब आप कहते हैं कि मेरी मां ऐसे स्थान पर चली गई है जहां गया कोई भी व्यक्ति संसार में आज तक वापस नही लौटा। कितना सफेद झूठ है यह कितना अपमानजनक है मेरे लिए।

ज्वलंत सत्य वह है कि जिस दिन मैं स्वयं को मिल जाऊँगा, उसी दिन मेरी मां भी मुझे मिल जाएगी।

और अनुभूत सत्य यह है कि इसीलिए इस पर विश्वास नहीं करेंगे !

नारे ! नारे !! और नारे !!!

आज नारे बाजी का युग है। अतः अग्रवाल समाज से सम्बन्धित कुछ उपयोगी नारे दिये जा रहे हैं, जिन्हें सुन्दर कपड़ों पर लिखवा कर सामाजिक जुलूसों में एवम् सभाओं पर प्रदर्शित किया जा सकता है तथा अवसर अवसर पर सिंहनाद के रूप में जनसमुदाद द्वारा प्रयुक्त कर जोश फूंका जा सकता है, सौ भाषण और एक सिंहनाथ (नारा) बराबर है :—

एक घाट पानी पीते थे, बकरी अरु बनराज।
ऐसे न्यायी शाषक थे श्री अग्रसेन महाराज॥

क्या चाहेगा देश धर्म को, जिसे जाति से प्यार नहीं।
जिसे न प्रिय परिवार, उसे प्रिय हो सकता संसार नहीं॥

छत्र, चँवर, नौबत, निशान का है हमको अधिकार।
एक हाथ में कलम हमारे, एक हाथ तलवार॥

मृत्यु भोज है मृत्यु क्षय है, पर्दा प्रथा, अशिक्षा आज।
निर्धनता अभिशाप, कुरीति कोढ़, छोड़ दें इन्हें समाज॥

हमने राज्य किया है, हम महाराजा अग्रसेन की सन्तान हैं।
सत्य, अहिंसा, धन, बल, बुद्धि, गुण, गौरव की खान हैं।

कर केसरिया ध्वजा सुहाए, सर केसरिया पाग।
सूरजवंशी नृप के सुत हम, हमें रोशनी से अनुराग।

नागराज वासुक से नाना, जस गाते चारण जसराज।
देवराज हैं मित्र हमारे, बहुत महत्वप्रद बृहद समाज॥

परशुराम का फरसा झुक गया, सुरपति ने मानी थी हार।
जहां सिकन्दर जगत विजेता मात खा गया सत्रह वार॥

छात्र धर्म तज वैश्य धर्म को सहज किया स्वीकार।
सुर नर मुनि ही नहीं सिंहणी तक से पाया प्यार॥

बावन क्रोडी सेठ हरभजन, अभय चन्द से वीर नरेश।
नानूमल जैसे दिवान थे, रक्षक राणी सती हमेश॥

लाला लजपत, भारतेन्दु कवि, शादिलाल से न्यायाधीश।
नर नाहर मालवा केशरी, आओ इन्हें झुकाएँ शीश॥

वरदहस्त श्री अग्रसेन का, महादेवी लक्ष्मी का वरदान।
कृषि, वाणिज्य सेवक बन हम सब, करें देश जाति उत्थान॥

घर घर की ज्योति

सम्पादिका
अलका गोयल एम. ए.

आखिर भगवान को आना पड़ा। तीन दिनों से निराहार बैठी महिला से उन्होंने पूछा—"आप क्यों इतने कष्ट उठा रही हैं ?"

महिला ने उन्हें गौर से देखा और कहा—"कहां से आये हो ? तुम्हें पता नहीं है इस गांव में लकड़बग्घे का कैसा आतंक छाया हुआ है ! कोई मां अपने बच्चे को छोड़ती है आजकल !'

'लेकिन आप जिसकी रक्षा कर रही हैं वह तो हाड़ मास का मानव शिशु नहीं—बालकृष्ण की मूर्ति मात्र है !'

महिला ने व्यंग की हंसी हंसकर उत्तर दिया—'किसी के बहकावे में आकर चिड़ियां अपने अण्डे को सेना नहीं छोड़तीं।

तो आप सोचती हैं कि सर्व शक्तिमान की मूर्ति आपकी रखवाली से ही सुरक्षित रहेगी ?'

'सुनो ! बच्चा बड़ा होकर मां को सहारा देता है, लेकिन जब तक वह बालक है, उसकी रक्षा तो होनी ही चाहिये।'

भगवान ने समझ लिया—सारे तर्क व्यर्थ जायेंगे। उन्होंने दूसरा तरीका अपनाया—'गांव में और औरतें भी तो हैं। किसी ने खाना-पीना तो नहीं त्यागा ! सब बच्चे सुरक्षित हैं।'

हां, वे अपने बच्चों को सास-ननद पर छोड़कर खाती-पीती हैं। पर मेरा कौन है ! कोई तो नहीं। बस ले देकर यही बाल गोपाल।'

भगवान एक लम्बी सांस लेकर निरुत्तर हो गये। किंचित काल बाद भरे गले से उन्होंने कहा—मां ! मेरा आना निरर्थक तो नहीं जायगा। कुछ मांग लो मुझसे।'

पालने पर झूलते हुए बालकृष्ण की ओर निर्निमेष दृष्टि टिकाये महिला ने कहा—'मुझे कुछ भी तो नहीं चाहिये पर देना ही चाहते हो तो ऐसा कुछ कर दो कि कोई मेरे कृष्ण का बाल बांका न कर सके।'

आगन्तुक ने जाने के पूर्व तथास्तु ही कहा होगा क्योंकि दूसरे ही दिन से लकड़बग्घे का प्रकोप शान्त हो गया।

तथास्तु !

सुधा

उपहार

— कु० इन्दु सिन्हा अहमदाबाद

शेफाली अभी-अभी घर के सारे कामों को निबटा कर उठी थी और सोच ही रही थी कि आराम करे कि बाहर से शेखर की आवाज आई। शेखर कह रहा था शेफाली देखो। आज तुम्हारे सुधांशु भैया तुम्हें लेने आ रहे हैं तुम्हें जरूर जाना पड़ेगा। मैं कोई बहाना नहीं सुनुगा, आफिस में मेरी पोजीशन का सबाल है मैंने अपने सभी सहकर्मिओं को बता दिया है कि हमारे नये बॉस मेरी बीबी के भाई लगते हैं। चाहे जैसे भी हो तुम्हें जाना ही होगा। जरा सोचो तो इतना बड़ा आफीसर एक कर्लक के घर गाड़ी लेकर आ रहा है और फिर आखिर सुधांशु बाबू तुम्हारे भाई ही तो लगते हैं चाहे दूर के रिश्ते से ही सही।

शेफाली कुछ न बोल सकी। मौन यंत्रवत् वह खड़ी रहीं उसका चेहरा निर्विकार था। उसे मौन देखकर शेखर ने कहा शेफाली जल्दी तैयार हो जाओ न चार बजने में अब देर ही कितनी है साढ़े चार तक सुधांशु बाबू गाड़ी लेकर आ जायेंगे। शेफाली ने एक नजर अपनी साड़ी पर डाली और खोई खोई सी नाचती हुई दूसरे कमरे में चली गई।

ठीक चार बजे सुधांशु की गाड़ी शेखर के छोटे से घर के सामने रुकी। शेखर बाहर बरामदे में ही था फौरन मुस्कुराता हुआ गया और सुधांशु को अपने साथ लेकर अन्दर की तरफ आते हुए उसने एक अभिमानपूर्ण दृष्टि अपने पड़ोसियों पर डाली जो हैरत से इसके दरवाजे पर खड़ी इम्पाला गाड़ी को देख रहे थे।

शेखर ने एक कुर्सी खींचकर सुधांशु को बैठने के लिए दी और शेफाली को आबाज देता हुआ अन्दर की तरफ चला गया।

सुधांशु बैठते हुए सोचने लगा शेफाली अब कैसी लगती होगी। इतने दिनों में वह बदल गई होगी और मैं भी कितना बदल गया हूँ, सुधांशु ने सोचा और एक हल्की सी मुस्कुराहट उसके होठों पर तैर गई। वह कुर्सी पर बैठा सिगरेट के गहरे-गहरे कश लेने लगा।

इतने में शेखर के पीछे-पीछे शेफाली ने प्रवेश किया। "नमस्कार सुधांशु भैया" उसके अधरों में कम्पन हुआ और वह वहीं मूतिवत् खड़ी रही। सुधांशु सोचने लगा कि शेफाली पहले से अधिक गम्भीर हो गई है चेहरा वही है सौम्य आकर्षक !

पर चंचलता का स्थान प्रौढ़ता ने ले लिया है वेषभूषा भी कितनी साधारण है । हाथ में कांच की चार चार चूड़ियाँ कानों में हल्के बूंदे और माथे पर सौभाग्य का प्रतीक सिन्दूर चमक रहा था । मौन को तोड़ने के बिचार से सुधांशु ने कहा देखो भई ! शेफाली समय कम है जल्दी तैयार हो जाओ तुम स्त्रियाँ तो शृंगार करने बैठ जाती हो तो समय का ध्यान ही नहीं रहता । यह सुनकर एक उदास सी हँसी शेफाली के होठों पर तैर गई उसने जवाब दिया भैया मैं तैयार हूं । सुधांशु को अपने कहने पर ग्लानि हो आई । शेफाली के शरीर पर एक भी आभूषण नहीं था यह बात उसे कचोट गई । वह सोचने लगा कि अपने घर उत्सव में शेफाली को ले जाकर कहीं वह गलती तो नहीं कर रहा । कहीं ऐसा न हो शेफाली इसे अपना अपमान न समझ बैठे ।

शेफाली सभी चीजें यथा स्थान रखकर चाभी शेखर को देती हुई बोली आप नाहक मुझे वहां भेज रहे हैं मेरी इच्छा बिल्कुल जाने की नहीं है और बोझिल कदमों से चलती हुई बैठक में पहुंची और कहा चलो भैया मैं तैयार हूं । सुधांशु ने कहा चलो और बाहर आकर गाड़ी में बैठ गया शेखर दोनों को छोड़ने बाहर आया और

धन आज के युग में प्रेम के रास्ते में दीवार बन गया । चाहें भाई-बहन का प्रेम हो या मित्रता का । कल तक जो सहेलियाँ पैसे के मापदण्ड से परे आपस में प्रेमपूर्वक रहती खेलती थी । आज उन्हें धनहीन सहेली के साथ बैठना इज्जत पर दाग महसूस होता है । ऐसी है यह पैसे की दुनियां । फिर कैसे रखती सुधांशु भैया का उपहार, शेफाली ! इसमें भी शंका होती अर्थहीन शेफाली के चरित्र पर ।

—सम्पादक

जब कार स्टार्ट हुई तो सुधांशु को उसने नमस्कार किया शेफाली की ओर देखकर मुस्कुराया और बरामदे में लौट गया ।

कार में पिछली सीट पर बैठी शेफाली सोच रही थी कि कभी सुधांशु का सानिद्ध उसे कितना अच्छा लगता था उनकी बहनें रेखा और बिन्दु के साथ वो भी उसे भैया ही कहती थी पर अब तो ये सब सोचना भी पाप है वह एक विवाहिता नारी है इस तरह की कल्पना करना भी उसके लिये पाप है ।

वह ख्यालों में खोई ही थी कि सुधांशु की आवाज ने उसे चौंका दिया वह कह रहा था उतरो शेफाली ! यही मेरा गरीब खाना है । शेफाली ने सिर उठाकर देखा गाड़ी एक आलीशान बंगले के लॉन में खड़ी थी । सकुचाती सी शेफाली अन्दर की ओर बढ़ी । सुधांशु ने आगे बड़कर आवाज दी अरे भाई रेखा-बिन्दु कहां गई तुम लोग देखो तुम्हारी बाल सखा शेफाली आई है । और देखो शेफाली ये रही तुम्हारी भाभी इस नाचीज की श्रीमती जी । शेफाली ने हाथ जोड़ कर नमस्ते किया जिसके

प्रत्युत्तर में भाभी जी ने हाथ भी नहीं उठाये सिर्फ सिर हिलाया मानों कह रही हो कि नमस्ते स्वीकार कर लिया गया है और अपनी कीमती साड़ी संभालती अपने कमरे में चली गईं । रेखा-बिन्दु ने भी कोई उत्साह नहींदिखाया । नौकरानी ने उसे कमरा दिखा दिया । वो अपने कमरे में जाकर उदास सी बैठ गई शायद इस बात को सुधांशु भांप गया ।

शाम को घर में काफी व्यस्तता नजर आ रही थी मानों मुन्ने का जन्म न हो कोई विवाह समारोह सम्पन्न होने जा रहा हो । रेखा बिन्दु तो शाम से ही साड़ियों और जेवरों का चुनाव कर रही थीं । उनका कमरा शेफाली के कमरे के बिल्कुल बगल में था अत: उनके बीच होने वाली बातचीत का अंश न चाहते हुए भी शेफाली ने सुन लिया । रेखा कह रही थी कि "अरे ये भैया को क्या सूझी जाकर इसे पकड़ लाए जरा अपनी पोजीशन का भी ख्याल न किया । अरे जब घनिष्ठता थी तब थी । अब इसका पति उसी आफिस में क्लर्क है और भैया खुद उसके घर जाकर इसे ले आए । बिन्दु ने जवाब दिया "और जरा इसे भी तो देख लाज शर्म छू तक नहीं गई इन्हीं कपड़ों में चली आई शरीर पर बुन्दों के अतिरिक्ति एक भी आभूषण नहीं अरे अपने नहीं थे तो किसी से मांग कर पहन लेती अपना नहीं कम से कम भैया की पोजीशन का तो ख्याल किया होता यूँ ही मुंह उठाये चलीं आई ।

रात को करीब आठ बजे सुधांशु अन्दर आया और अपने को बहुत व्यस्त प्रदर्शित करता हुआ कहने लगा शेफाली ! अरे ओ शेफाली !! लो भई अपनी चीज संभालो यह शेखर ने आफिस के एक छोकरे के हाथ भिजवाए हैं । वो भी बहुत लापरवाह है ऐसी चीजें दूसरों के हाथ भिजवाई जाती है भला ? अच्छा लो अपनी अमानत संभालो मैं चलूँ ।

शेफाली ने देखा गुलाबी कागज में लिपटा सोने के कंगनों का एक जोड़ा था । कंगन देखते ही बिन्दु ने कहा—अरे यह कब बनवाया बड़ा सुन्दर डिजाइन है ।

रेखा ने आकर कहा अरे शेफाली अभी तक तुम तैयार नहीं हुई अब जल्दी तैयार हो जाओ आओ ये कंगन मैं तुम्हें पहना दूं और वो शेफाली के गले में बांहें डालकर लगभग खींचती सी उसे कमरे में ले गई शेफाली सोचने लगी कि आखिर सुधांशु भैया को ये क्या सूझी बात कही फूट गई तो लोग क्या समझेंगे । पर आखिर वही हुआ; रात को भाभी के कमरे से उनके जोर-जोर से बोलने की आवाज आ रही थी जिससे शेफाली को यह पता चला कि सुधांशु भैया की कमीज के जेब से कैशमिमों मिला जिसमें कंगन का मूल्य लिखा हुआ था और खरीदने वाले की जगह सुधांशु का नाम था । घर में मानों भूचाल आ गया था हर तरफ शेफाली की ही चर्चा थी । इसी समय रेखा ने प्रवेश किया औ कहा—शेफाली । ये मैं क्या सुन रही हूं कि सुधांशु भैया ने तुम्हें कंगन खरीद कर दिऐ और मन चुपचाप ले लिए । एक

विवाहिता नारी होकर तुमने यह क्या किया शेफाली। भाभी बहुत नाराज हो रही हैं तुमने भी अच्छा फांसा है भैया को। लाओ वो कंगन मुझे दो मैं भाभी को दे दूंगी और उसने हाथ बढ़ाकर शेफाली के हाथों से कंगन उतार लिया। निर्जीव-निष्प्राण सी शेफाली बैठी रह गई समारोह के समय भी वह बाहर नहीं निकली रात को नौकर खाना कमरे में ही रख गया पर उसने छुआ तक नहीं। दूसरे दिन सुबह नौ बजे के करीब सुधांशु ने आकर कहा—शेफाली शेखर की तबियत अचानक बहुत खराब हो गई है उसने एक आदमी द्वारा खबर भिजवाई है आज तुम्हारा जाना बहुत जरूरी है। शेफाली ने कुछ जबाव नहीं दिया चुपचाप चलती हुई बाहर आ गई। रेखा बिन्दु या भाभी में से कोई भी इसे छोड़ने तक न आया। सिर झुकाए चुपचाप सुधांशु ने कार स्टार्ट कर दी पिछली सीट पर निस्पृह निर्जीव की भांति शेफाली बैठी रही, कार में मृत्यु की मानिंद सन्नाटा छाया हुआ था।

(–) -दो मिनी कविताएं- (–)

"सदुपयोग—खोटे सिक्के का"

बुद्धिजीवी विद्वान मित्र का तर्क है—
भूल-चूक में जब कभी
पांच या
दस पैसे का खोटा सिक्का पाता हूँ।
तो उसे फिर,
आगे किसी को नहीं चलाता हूं।
हां, या तो
किसी सूरदास को भेंट चढ़ाता हूं।
और या फिर ध्यानमग्न देख,
मन्दिर में हनुमानजी के चरणों में आता हूँ।

अहसान—नेताजी का"

कुछ लिखने को जैसे ही कलम उठाई।
किस पर क्या लिखूँ,
इस सोच में पड़कर रुक गई कलम हरजाई
तो कभी यकायक,
दौड़ने लगी कलम क्या जैसे हवा पुरवाई।
क्योंकि गली के नुक्कड़ पर उसे,
एक सफेद टोपी वाले की शक्ल नजर आई।

—श्यामगुप्ता 'शान्त'
पाली (राज०)

अचानक सूधांशु ने मौन भंग किया 'शेफाली' शेखर की तबियत खराब नहीं है वो तो मैंने यों ही · · · मैं जानती हूँ। बात काट कर शेफाली ने कहा, यह सुन कर सुधांशु ने सिर झुका लिया और बोला—सच मानों मैं तुम्हें इस तरह अपमानित कराने के लिए नहीं लाया था शेफाली और वो कंगन भी मैंने तुम्हें अपमानित करने के लिए नहीं दिया। पर मुझे पता न था कि परिवार के लिए अर्जित पैसों में से इतना भी कर सकने का हक मुझे नहीं। पर सुधांशु बाबू आखिर आपको ये कंगन देने की क्या सूझी ? मुझे तो जेवर पहनना पसन्द नहीं है इसीलिए मैं कुछ पहनकर नहीं आई इससे मैंने तो स्वयं को हीन नहीं समझा पर आपको नये कंगन खरीद कर मुझे देने की क्या आवश्यकता थी ?

अचानक सुधांशु को जैसे कुछ याद आया। उसने पेंट की जेब में हाथ डाल कर लाल कागज में लिपटी कोई चीज निकाली। शेफाली ने देखा स्वर्ण कंगनों का एक जगमग करता जोड़ा था। वह जोर से हँस पड़ी और बोली—आप फिर ये क्या उठा लाये सुधांशु भैया ? आपके यहां पैसे पेड़ में उगते है क्या ? इतने पैसे मेरे लिए क्यों बर्बाद कर रहे हैं।

सुधांशु ने ज़वाब दिया—यह तो तुम्हें स्वीकार करना ही होगा क्योंकि यह मैंने घर खर्च के पैसों से नहीं खरीदा है मैंने अपनी अंगूठी बेचकर बदले में ये कंगन लिए हैं। शेफाली की नजर सुधांशु की उंगलियों पर पड़ी। वास्तव में उसकी उंगलियों के मध्य ज़गमगाने वाली हीरे की अंगूठी नहीं थी। पर मैं कहती हूं इस कंगन की जरूरत ही क्या है ?

सुधांशु ने कहा तुम्हारा जो अपमान मेरे घर में हुआ है उसका प्रायश्चित तो मैं कभी नहीं कर पाऊँगा शेफाली पर मैं ये कंगन तो तुम्हें ग्रहण करने ही होंगे बहन! नहीं तो मैं समझूंगा कि तुमने मुझे माफ नहीं किया। शेफाली चौंकी सुधांशु के मुख से ये बिल्कुल नया सम्बोधन था। वह अब ज्यादा इन्कार नहीं कर सकी तनिक हिचकिचाते हुये अपने हाथ आगे बढ़ा दिया। कुछ देर अपने कलाइयों से लिपटे कंगन का अद्भुत सौंदर्य देखती रही। कंगन पहना चुकने के बाद सुधांशु ने सिर झुका कर अस्फुट स्वर में कहा तुम्हारे हाथों में यह चीज अक्षय हो बहन। ऐसी कामना करता हूं। शेफाली कुछ जबाव न दे सकी। इतने में घर आ गया दोपहर हो चली थी सर्वत्र सन्नाटा था। सुधांशु ने पेड़ों के झुरमुट के बीच गाड़ी खड़ी कर दी। शेफाली नीचे उतरी और हाथ जोड़ कर सुधांशु को नमस्कार किया। जब गाड़ी आंखों से ओझल हो गई तो शेफाली घर की दिशा में मुड़ी उसे पता था कि शेखर आफिस में होगा और चाबी पड़ोसन के घर रख गया होगा अचानक उसकी दृष्टि अपनी कलाई पर ठहर गई। उसने सोचा कि पड़ोसिन इन कंगनों को देखकर अवश्य पूछेगी। उसकी पारिवारिक स्थिति ऐसी नहीं थी ताकि वह कह सके कि उसने नये लिये हैं पर इसी समय उसके मन में बात आई कि उसने लिए ही क्यों ? सुधांशु से उसका क्या रिश्ता है ? वह शेखर की पत्नी है एक विवाहिता नारी है। बिन्दु ने भी तो कहा था विवाहित स्त्री को ऐसा नही करना चाहिऐ। उसने अपने मन में कुछ निश्चय किया और पेड़ों को पार कर उनके पीछे वाले तालाब की सीढ़ियों तक आ गई। मंत्रमुग्ध सी उसने कलाई से कंगन उतार कर हाथों में ले लिए। उसके चेहरे पर दृढ़ निश्चय के भाव थे। क्षण भर पश्चात् जल में छपाक् की हल्की सी ध्वनि हुई। शेफाली ने चारों तरफ देखा सुनसान दोपहरी थी वह उल्टे पांव दृढ़ता पूर्वक पग उठाती घर की तरफ लौट पड़ी।

तालाब का जल क्षण भर आन्दोलित रहने के बाद शान्त हो चुका था। लहरों का कम्पन आखिर कितनी देर बाकी रहता है।

विवाहिक सुविधाएं

लड़कों की सूची

क्रम सं० ३६१—गोयल २२ वर्ष, ५'-५" बी० कॉम० एल० एल० बी०, शिक्षारत व्यापार चन्दोसी निवासी।

क्रम सं० ३६२—ऐरन, २५ वर्ष, ५'-७" बी० कॉम०, चन्दोसी निवासी।

क्रम स० ३६३—ऐरन, २२ वर्ष, बी० काम०, एल० एल० बी०, चन्दोसी निवासी।

क्रम सं० ३६४—कंसल, २२ वर्ष, ५" बी०, एस-सी० मेरठ निवासी।

क्रम सं० ३६५—सिंघल, २६ वर्ष, एम० ए०; बी० एंड० रतनगढ़ निबासी।

क्रम सं० ३६६—गोयल, २० वर्ष, ५" हाईस्कूल, अलीगढ़ निवासी।

क्रम सं० ३६७—गोयल, २४ वर्ष, ५" सरकारी सर्विस, आय ४७५) नई दिल्ली निवासी।

क्रम सं० ३६८—गर्ग, २४ वर्ष, सुपरवाइजर ३७५) आय, खुर्जा निवासी।

क्रम सं० ३६९—गोयल, २५ वर्ष, एम० एस-सी० (गणित) ५-९" छतरपुर निबासी।

क्रम सं० ३७०—गोयल, २४ वर्ष आई० टी० आई० डिप्लोमा अलीगढ़ निवासी।

क्रम सं० ३७१—गर्ग १८ वर्ष, बी० फारमा, झांसी निवासी।

क्रम सं० ३७२—सिंघल, २४ वर्ष, एम०एस-सी० प्रोफेसर, झांसी निवासी।

क्रम सं० ३७३—गर्ग, २२ वर्ष, झांसी निवासी।

क्रम सं० ३७४—मंगल, २५ वर्ष, बी० एस-सी०, एल० एल० बी०, झांसी निवासी।

क्रम सं० ३७५—सिंघल, २५ वर्ष एम० बी० बी० एस० झांसी निवासी।

क्रम सं० ३७६—गोयल, २३ वर्ष, एम० एस-सी०, अलवर निवासी।

क्रम सं० ३७७—सिंघल, २१ वर्ष, सी० ए० फ्रील अलवर निबासी।

क्रम सं० ३७८—ऐरन, एम० बी० बी०-एस०, अलवर निवासी।

क्रम सं० ३७९—गोयल, २३ वर्ष, एम० एस-सी० अलवर निवासी।

क्रम सं० ३८०—गोयल, २६ वर्ष, एम० एस० अलवर निवासी।

क्रम सं० ३८१—गोयल, २४ वर्ष, इन्टर व्योपाररत, बरेली निवासी।

क्रम सं० ३८२—मंगल, २४ वर्ष शिक्षा सामान्य, व्यापाररत आगरा निवासी।

क्रम सं० ३८३—कंसल, २८ वर्ष, लड़की विधवा या परित्बागा भी चल सकती है। आगरा निवासी।

क्रम सँ० ३८४—गोथल, २४ वर्ष शिक्षा सामान्य, व्यापाररत आगरा निवासी।

क्रम सँ० ३८५—गोयल २४ वर्ष शिक्षा समाज स्वयं व्यापाररत, आगरा निवासी।

कन्याओं की सूची

क्रम सं० ६१५—बंसल, २१ वर्ष, इण्टर, सुन्दर, आगरा निवासी।

क्रम सं० ६१६—गोयल, २० वर्ष, हाईस्कूल फेल, गोरा, कासगंज निवासी।

क्रम सं० ६१७—बिन्दल, १६ वर्ष, इण्टर गोरा शिक्षारत कासगंज निवासी।

क्रम सं० ६१८—बिन्दल, १८ वर्ष, बी० ए० पार्ट II कासगंज निवासी।

क्रम सं० ६१९—गोयल, २२ वर्ष, ५'-२" एम. ए. बी. एड बदायूं निवासी।

क्रम सं० ६२०—गोयल २२ वर्ष, एम० ए० ५'-३' ग्वालियर निवासी।

क्रम सं० ६२१—ऐरन, २२ वर्ष, ९वीं पास डाल्टनगंज निवासी।

क्रम सं० ६२२—ऐरन, १८ वर्ष, हाईस्कूल डाल्टनगंज निवासी।

क्रम सँ० ६२३—सिंघल, २२ वर्ष, बी० एस-सी, ऐम० बी० बी० ए०स, नई दिल्ली निवासी।

क्रम सं० ६२४—गोयल, २१ वर्ष, एम० ए०, गाजियाबाद निवासी।

क्रम सं० ६२५—गुप्ता, २० वर्ष, बरेली निवासी।

क्रम सँ० ६२६—जिंदल, ५'-३" एम०ए० गोरखपुर निवासी।

क्रम सं० ६२७—गोयल, ५'-१" हाईस्कूल टेलरिंग डिप्लोमा कोटा निवासी

क्रम सं० ६२८—गुप्ता, २२ वर्ष, एम०ए०, शिकोहाबाद निवासी।

कूपन

विवाहिक सुविधा

ग्राहक नाम.....

पता .....

.....

क्रम सं०.....

ग्राहक संख्या.....

उत्तर प्राप्ति के लिये अपनी ग्राहक सं०अवश्य लिखें। अगर आप ग्राहक नहीं बने हो तो कृपया १०) मनीआर्डर द्वारा भेज कर रसीद सख्या लिखें।

विवरण-फार्म

१. लड़के/लड़की का नाम.....
२. आयु.....गोत्र.....शिक्षा.....
३. कद .....रंग.....वजन.....
४. वर्तमान कार्य .....
५. क्या काम करता/करती हैं...आय...
६. परिवारिक जानकारी.....
७. पिता का नाम, कारोबार व आय...
८. कहाँ के रहने वाले हैं...कहां रहते हैं
९. विशेष आकांक्षा.....
१०. पूरा पता ....

उपरोक्त विवरण सादा कागज पर साफ शब्दों में निशुल्क मुद्रण हेतु भेजें।

निवेदन—कृपया इस सम्बन्ध में एक समय में केवल ३ पते की जानकारी हेतु पत्र ५० पैसे के टिकट व कूपन सहित निम्न पते पर भेजने का कष्ट करें।

'विवाहिक सुविधा' अग्रबन्धु कार्यालय

कोकामल मार्केट, प्रयागनारायण मार्ग, आगरा-३

वैश्य धर्म का पृष्ठ २० का शेष

इसलिए हमारे जीवन की सफलता सत्य की रक्षा तथा प्राप्ति में ही है। प्रजातन्त्र में देश की रक्षा का दायित्व प्रत्येक नागरिक पर होता है। विशेषत: व्यापारी पर; क्योंकि सत्यतापुर्वक व्यापार से उपार्जित धन ही राष्ट्र की शक्ति का दुरुपयोग करना, जरूरत से ज्यादा खर्च करना कठिनाइयां पैदा करता है। सत्यता एवं ईमानदारी से व्यापार करो और उपर्जित धन को समाज-कल्याण के उत्तम-से उत्तम कार्य में उदारतापूर्वक व्यय करो। इसी में वैश्य-धर्म की सार्थकता है।

बहती गंगा का पृष्ठ १५ का शेष

हो गया और खाने को सब्जी और पूड़ी ठंडी है। अपने घर में हम सब बर्दाश्त कर लेते हैं पर दूसरे के साथ यह बर्दाश्त क्यों नहीं कर सकते शायद इसीलिए कि हमारा मन एक झूटी आत्म प्रतिष्ठा और सम्मान का भूखा हो जाता है और हम उसके लिए निर्दोष को दोष देने लगते हैं। यह सब ढोंग हैं इसे दूर करना होगा और इसके प्रति हमें सजगता के साथ काम लेना होगा। क्या जरूरत है इतनी बड़ी बारात जाए क्या जरूरत है इतना स्वाग और ढोंग करने की। सीधा साधा रूप बनाइये और उसको सब छोड़िए। बचत से काम लीजिये और सादगी से काम निपटाइए।

क्या आप सामूहिक विवाह से यह महसूस नहीं करते कि यह एक सुन्दर और अच्छा तरीका है। फिजूल खर्ची रोकने का और आपका अपना समय ज़ो आपके स्वय काम आएगा। आप अपना रुपया बचाकर लड़की दामाद को दीजिए उनके कोई काम तो आएगा। क्या जरूरत है उसे आतिशवाजी, बाजे वालों, शामियाना और दीगर चीजों में लुटाने की।

जहां आप एक शादी में इतना रुपया खर्च कर डालते वहां उसी पैसे से हम पच्चीसों शादी कर सकते हैं। देखिए तो सही आपके बारात स्वागत में कितनी भीड़ होती है उससे तो इसमें अधिक भीड़ होगी। इसमें गरीब अमीर का कोई भेद नहीं यह नहीं सोचिए कि इसमें सामर्थवान और बड़े लोग शामिल नहीं होते या होंगे। अरे जमाना बदल गया है। और कल जो हम पर उंगली उठाते थे वहीं आज डींग हाँकतें हैं और इसी का परिणाम हैं। इतने सम्मेलन पूरे भारत में हो रहे हैं कि आप उनकी गिनती भी नहीं कर पा रहे। आइये यह तो एक यज्ञ हैं और आप सभी हमारे हाथ मजबूत करिए। इन सामूहिक विवाह सम्मेलन से सम्बन्धित सैकड़ों समस्याऐं हमारे सामने आती हैं उनका तो यहां बिशद वर्णन करना मुश्किल है। पर यह याद रखिए कि हर अच्छे काम को करने में समस्यायें उत्पन्न होती हैं और हमें उन्हें सुलझना होता है। वह मनुष्य ही क्या जो हारकर बैठ जाए। जब तक समस्याएँ उत्पन्न नहीं होंगी हल कहाँ से निकलेगा। और फिर आप अकेले तो हैं नहीं पूरा समाज आपके साथ है। बहती गंगा में हाथ धोइए और आगे बढ़िए।

श्री कमलनयन जी बजाज भू० पू० अध्यक्ष अ० भा० अग्रवाल महासभा

अग्रबन्धु

अग्रवाल जातीय पत्र-पत्रिकाएँ

अग्रवाल जाति से संबंधित अनेक पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन समय–समय पर होता रहा है और उनके द्वारा जातीय जागरण एवं सामाजिक उत्थान का महत्वपूर्ण कार्य भी हुआ है। किन्तु वे स्थायी नहीं हो सके, कुछ ही काल तक आपनी आभा बिखेर कर अस्त हो गये इस समय जिन पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है, उनकी स्थिति भी सन्तोषजनक नहीं है। वे किसी भी समय काल के गाल में समा सकते हैं। यह स्थिति निश्चय ही ऐसे विशाल और समृद्धिशाली अग्रवाल समाज के लिए अत्यंत अशोभनीय है। प्रस्तुत तालिका में से करीब १० पत्रिका ही प्रकाशित हो रही हैं।

१९५८ 'अग्रबन्धु' सम्पादक प्रकाश बंसल, प्रयागनरायन मार्ग आगरा।
१९७० 'अग्रसेन पुष्पांजलि' सम्पादक नरेन्द्र अग्रवाल इमलीबाजार, इन्दौर
१९७० 'अग्रवाल प्रकाश' स० मनोहरलाल अग्रवाल, सेक्टर १५डी, चडीगढ़
१९५९ 'अग्रवाल', स० श्री भद्रसेन, दिल्ली
१९६३ 'अग्रवाल समाज' स० श्री दुर्लीचन्द 'शशि' हिन्दी नगर हैदराबाद
१९६० 'अग्रवाल पत्रिका' स० श्री भूलराज एम०ए०, लुधियाना (पंजाब)
१९६२ 'अग्रवाही', स० श्री नन्दकिशोर अग्रवाल, २०१ जावरा कम्पाउण्ड इन्दौर।
१९६३ 'अग्रोहा', स० श्री बालकृष्ण एम० ए०, ४४२१ नई सड़क दिल्ली-६
१९५६ अग्रगामी' जौहरी बाजार जयपुर (राजस्थान)
१९६३ अग्रनीति' स० श्री देवदत्त दुवे अग्रनीत साप्ताहिक, मथुरा (उ० प्र०)
१९६३ 'अग्रवाल स्नेही', सोजती गेट, जोधपुर (राजस्थान)
१९६५ 'अग्रज्योति' ज्वालानगर शाहदरा दिल्ली।
१९७४ अग्रवाल वाणी स० नवलकिशोर अग्रवाल पाटनकर बाजार ग्वालियर।
१९७४ 'अग्रवाल पत्रिका' स०गोपीनाथ अग्रवाल भैयाजी' पान दरेरिवा इलाहाबाद।
१९६० 'अग्रवाल सन्देश' स० ज्ञानप्रकाश गर्ग, लेखराजनगर, अलीगढ़।
१९५३ अग्रवाल सन्देश स० महेन्दर अग्रवाल अलोगढ़।
१९५३ मंगल मिलन स० रामेश्वरदास गुप्ता साऊथ ऐक्सटेन्ट नई दिल्ली।
१९७१ अग्रसेनवाणी स० ललित किशोर अग्रवाल सवाई माधोपुर।
१९५६ अग्रवाल हितैषी पंजाबी बाग दिल्ली।
१९५० अग्रवाल हितैषी स० पूरनचन्द हितैषी आगरा।
१९४० अग्रवाल बन्धु स० डा० वैकुन्ठनाथ आगरा।
१९५३ अग्रवाल समाचार सम्पा हरिकिशन अग्रवाल धरमपेठ नागपुर
१९६५ अग्रसेन सन्देश सम्पा. नरेन्दमोहन अग्रवाल गांधो चौक सदर नागपुर
१९४७ ज्ञानोदय सम्पा. मनुदत्त शर्मा हिसार
१९६२ अग्रसमाज सम्पा. राजेन्द गर्ग कलकत्ता
१९५६ अग्रवाल समाचार सम्पा. रोशन लाल अग्रवाल
१९७४ सुपथग सम्पा. सत्य नरायण दुवे घी वाले, औरया इटावा
१९७३ अग्रोहा तीर्थ सम्पा. लक्ष्मी नरायण अग्रवाल दिल्ली
१९७४ अग्रपथ टोंक (राजस्थान)
'अग्रदर्पण', श्री अग्रवाल धर्मशाला, गुजराती बाजार, सागर (म०प्र०)
'अग्र वाणी' भीलवाड़ा (राजस्थान)
'अग्रवाल जाग्रति', दादी सेठ अग्यारी, कालवा देवी बम्बई

इनके अलावा अग्रवाल समाज की वार्षिक स्मारिकाऐ देश भर में ५० के करीब निकलने लगी है। जिसमें हैदराबाद, जबलपुर, लखनऊ मथुरा आदि की प्रमुख हैं। पत्र-पत्रिकाओं का विवरण आगामी अङ्कों में प्रकाशित करने का प्रयास जारी है।

ज्यों से ही अभिलाष ने सुमन के स्टुडियो में कदम रखा, वैसे ही उसके पाँव वहीं पर ठिठक गये। कुछ देर तक तो वह द्वार पर ही खड़ा-खड़ा उस अप्रतिम शान्त चित्त से बैठी कला की देवी को निहारता रहा। सुमन अभिलाष के ही चित्र में बड़ी ही तन्मयता से रंग भर रही थी। सुमन के हाथों में भगवान ने न जाने कौन सा ज़ादू भर दिया था कि जिससे अभिलाष उन हाथों द्वारा बनाये गये स्वयं अपने ही चित्र को देखकर मुग्ध-सा रह गया। कुछ क्षणों तक तो वह यह भी भूल गया कि चंदा भी उसके साथ है। अभिलाष को द्वार पर ही रुके देखकर चंदा तुरन्त ही कह उठी···"चलिए न···आप यहीं पर क्यों रुक गए ?"

चंदा की आवाज सुनकर तुरन्त ही सुमन ने द्वार की ओर रुख किया। द्वार पर चंदा और अभिलाष को देखकर वह खुशी से झूम उठी।

"आओ अभिलाष, तुम वहीं पर क्यों रुक गए ? देखो तो यह तसवीर जो मैंने अभी-अभी ही पुरी की है।" फिर चंदा की ओर देखकर वह कहने लगी "तुम बताओ चंदा, कैसी बनी है यह तसवीर ?"

इन्तजार

—हेमलता हान्डा, अहमदाबाद

"बहुत सुन्दर दीदी। सच दीदी, आप बहुत खुशकिस्मत हैं भगवान ने आपके हाथों में जादू भर दिया है। यह चित्र मुझे दे दो इसे मैं हमेशा अपने साथ रखूंगी।" "और उस चित्र वाले को कहाँ रखोगी चंदा ?" अभिलाष बीच ही में बोल उठा।

अभिलाष की इस बात से चंदा का निर्दोष मासूम चेहरा एक अनोखी लज्जा की लालिमा से छा गया। वह खामोश हो गई। अभिलाष के सवाल का उत्तर वह चाहकर भी न दे पाई।

बड़ी भोली हो तुम चंदा। इस जरा-सी बात में यूँ लजा गयीं। पगली यह तसवीर वाला तो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा एक साये की तरह। और यह तसवीर ! इसे तो मैं आप दोनों की शादी के वक्त दूँगी, प्रजेन्ट के रूप में। इस तसवीर को देखकर कम-से-कम तुम्हें अपनी इस बद्किस्मत बहिन की याद तो आयगी।" कहते हुए सुमन के चेहरे पर एक साथ अनेक भाव तादृश्य होने लगे। उसके चेहरे पर एक विचित्र-सा तनाव आ गया। स्तब्ध से रह गये वे दोनों सुमन के इस नये रूप को देखकर।

लाख कोशिश करने पर भी अभिलाष सुमन की जिन्दगी का रहस्य जान नहीं पाया था। उसके जीवन की तनहाइयों और अकेलेपन की ओर रुख करते हुये कई बार अभिलाष ने उसके व्यतीत जीवन के राज को जानने का प्रयत्न किया था पर

हर बार वह नाकाम रहा था। दूसरे पल ही सुमन सम्हल गई। चेहरे पर हल्की-सी मुस्कुराहट बिखेरते हुये वह कहने लगी "माफ करना भैया, कभी-कभी अनजाने में ही मैं, न जाने क्या कुछ कह जाती हूं।

नहीं दीदी, आप हमे 'अपना' नहीं समझती। तभी तो आप हमसे अपनी जिन्दगी का रहस्य छिपा रही हैं।" अभिलाष तुरन्त ही कह उठा।

"नहीं भैया ऐसा मत कहो। वक्त आने पर सब कुछ मैं तुम्हें बता दूँगी। और तुम दोनों ही तो इस दुनियाँ में 'मेरे अपने' हो। तुम्हारे अलावा और कौन है मेरा इस दुनियाँ में ?" सुमन की आवाज में एक दर्दनांक कसक थी कुछ ही क्षणों में खुशियों से परिपूर्ण माहौल गम के अथाह समन्दर में डूब गया। सुमन के जवाब का अभिलाष के पास कोई जवाब न था।

अभिलाष और चंदा गए पर दिल में एक दर्दभरी कसक लिये हुंये। और साथ ही सुमन के भयावह अतीत के जख्मों के घाव फिर से ताजा करते गये। बड़े ही प्रयत्नों द्वारा सुमन उन यादों को भुला पाई थी। वह एक शान्त समन्दर की तरह थी उस समन्दर की तरह, जिसके भीतर चाहे कितनी ही आग जलती हो पर ऊपर से वह बिलकुल शान्त दिखाई देता है।

सहसा सुमन के दिलोदिमाग पर एक चेहरा तादृश्य हो उठा—गुलशन का चेहरा, उसके पति का चेहरा। कैसे भुला सकती है वह उसकी याद को ? सुमन ने लाख कोशिश की उसे भूल पाने की, पर न जाने क्यों वह आज भी गुलशन से ही प्यार करती थी लाख चाहने पर भी उससे नफरत नहीं कर सकी।

उसके विवाह का वह पहला दिन ..... कि जब भावावेष में आकर वह गुलशन से कह उठी थीं "आप अपने इस 'सुमन' को हमेशा अपने 'गुलशन' में सजाये रखना। कभी भूलकर भी आप उसे अपने गुलशन से जुदा मत करना।" कितनी उम्मीदें थीं ..... कितनी तमन्नाएँ थीं उन शब्दों में। ... पर ... पर उस गुलशन में बाहर आने से पहले ही फिजा आ गयी। सुमन के दिल की तमन्नाओं के सुमन खिलने से पहले ही मुरझा गये।

वह भयावह वर्षा का दिन आधी रात का वक्त कैसे भुला सकती है सुमन उस दिन की याद को। जब गुलशन का इन्तजार करते हुये आधी रात बीत गई थी। दिल में न जाने क्यों, कई अशुभ विचार आने लगे थे। सुमन की आंखें भी थक गयीं थीं इन्तजार करते हुये।

आखिर वे इन्तजारों की घड़ियाँ समाप्त हुई। गुलशन ने जब अपनी कार पार्क की, तब वह बावरी-सी होकर उसका स्वागत करने के लिये द्वार की ओर लपकी। पर द्वार पर आते ही गुलशन को एक अन्य युवती के साथ देखकर वह वहीं

पर ठिठक गयी। उसके कदम वहीं पर मानों जम-से गये। उसे देखते ही गुलशन कह उठा "रूक क्यों गयी सुमन ? आओ इनसे मिलो। यह है निशा। मेरा अतीत··· मेरी ज़िन्दगी···मेरी खशी। अब यह हमारे साथ ही रहेगी। इसीलिए तो मैंने माँ को हमेका के लिये हरिद्वार भेज दिया है। यदि माँ यहां होती तो वे निशा का यहाँ रहना हर्गिज पसन्द न करतीं। कहते हुए गुलशन निशा को लेकर अपने कमरे की ओर चल दिया। उसे सुमन की मानो कोई पर्वाह नहीं थी।

सुमन की आँखों के सामने अंधेरा सा छा गया। कैसा अनोखा रूप था यह जिन्दगी का ? वह कुछ समझ नहीं पा रही थी। आज उसकी आँखों के सामने ही उसका हरा-भरा गुलशन उजड़ रहा था। पर वह बिलकुल असमर्थ थी। वह चाहकर भी उसमें बाहर न ला सकी। गुलशन की खुशी के लिये ही उसने उस घर को त्याग दिया और अल्मोड़ा की सूनी बस्ती में आकर रहने लगी।

उसकी चित्रकला अब उसके व्यवसाय का साधन बन चुकी थी। न चाहते हुये भी मजबूरन उसे अपनी कला को बेचना पड़ रहा था। बिलकुल सस्ते दामों से वह अपनी अनमोल कला को बेच रही थी।

उसकी वीरान जिन्दगी में उसे अभिलाष का प्यार मिला एक नन्हे भाई के रूप में। इस प्यार को पाकर वह खुश थी बहुत खुश। कुछ दिनों से अभिलाष अमृतसर गया हुआ है अपने पिताजी से मिलने और साथ ही अपने और चंदा के विवाह की स्वीकृति मांगने। बहुत खुश थी सुमन। पर साथ ही उसके दिल में एक अनजाना सा डर था कि कहीं दौलत की दीवार चंदा और अभिलाष को जुदा न कर दे। पर उसे अभिलाष पर पूरा विश्वास था। वह अपने पिता की दौलत से कहीं अधिक प्यार चंदा से करता था। हर पल हर क्षण वह चंदा के साथ दिन-रात अभिलाष का इन्तजार करने लगी। पर यह इन्तजार की घड़ियाँ थी कि जो समाप्त ही नहीं हो रही थी। उन दोनों के दिल की आशा का चिराग मानो बुझ-सा गया। अभिलाष का कहीं कोई पता न था।

चंदा कुछ दिनों से सुमन के साथ ही रहने लगी थी। उसकी जिन्दगी का एक मात्र सहारा उसका बाबा भी इस दुनियाँ से बिदा हो गया। वह बेसहारा हो गई। सुमन ने उसे सहारा दिया। चंदा के दिल में हल्की-सी आशा की शमा अब भी झिल-मिला रही थी। एक दिन अपने नाम अभिलाष का खत पाकर वह मानो पागल-सी हो गई। खत में अभिलाष ने अपनी बेबसी का चितार प्रस्तुत किया। जिसे पढ़कर चंदा कांप सी गई।

"मैं तुम्हारा बहुत बड़ा गुनहगार हूं चंदा। मैं चाहते हुये भी मजबूरी के बंधन को न तोड़ सका। पिछले वर्ष पिताजी ने जबरदस्ती मेरा ब्याह एक अमीर बाप की बेटी से कर दिया। पर अब मैं उन सभी बन्धनों से मुक्त हूँ। पिछले महीने ही पिताजी का ट्रेन एक्सीडेण्ट में अवसान हुआ है। मैं कल ही तुम्हें लेने आ रहा हूं।

तुम मेरे जीवन का सुहाना अतीत हो। मैं उस अतीत को सदा अपने पास रखना चाहता हूँ।" पत्र पढ़कर चंदा एक सूखे पत्ते की तरह कांप-सी गयी। उसके जीवन की खुशियों में मानों एक ग्रहण-सा लग गया था। सुमन ने जब वह खत पढ़ा तब वह क्रोध में पागल-सी हो गई। वह बड़ी ही बेसब्री से अगले दिन का इन्तजार करने लगी। कैसी विचित्र बात थी! सुमन के ही जीवन की कहानी एक बार फिर से कुदरत दौहरा रही थी। वह तो सुमन ही थी कि जिसने अपने पति की जुदाई का गम बर्दाश्त कर लिया और अपनी सारी खुशियां उस उनजान युवती को अर्पित कर दीं। पर ··· पर ··· अभिलाष की पत्नी ···वह अमीर बाप की बेटी वह क्या चंदा को बर्दाश्त कर सकेगी। नहीं! नहीं!! चंदा को वहां सिवाय रूसवाइयों के, सिवाय लानतों के और कुछ न मिल पाएगा। वह कभी चंदा को वहां जाने न देगी ··· ··· कभी नहीं। सुमन ने आहट होते ही नजर उठाकर द्वार की ओर देखा। द्वार पर अपराध की सी मुद्रा में अभिलाष खड़ा था।

"आओ अभिलाष वहीं पर क्यों रुक गये! सुमन की आवाज में एक अनमना सा भाव था। इस आवाज में अब पहले का-सा उत्साह नहीं था अपने भाई के प्रति निर्दोष स्नेह का भाव नहीं था।

"आपने अब भी मुझे क्षमा नहीं किया दीदी?" सुमन ने एक नजर अभिलाष को देखा। फिर बिना कुछ कहे सामने रखे अभिलाष के चित्र पर से पर्दा हटा दिया। अपना चित्र देखकर अभिलाष एक बारगी कांप-सा गया। बड़ी अजीब बात थी! चित्र में अब पहले जैसी मासूमियत नहीं थी निर्दोषता नहीं थी। उसे अपना ही चित्र अब बड़ा ही भयावह लग रहा था। उसकी इस हालत को देखकर सुमन कहने लगी— "कांप क्यों गए अभिलाष? अपने ही चित्र को देखकर क्यों घबरा गये? गौर से देखो अभिलाष, तुम्हारे इस चित्र के चेहरे पर से अब निर्दोषता का अमृत नहीं पर बेवफाई का जहर टपक रहा है। तुमने छल किया है चंदा के साथ। नहीं दीदी, ऐसा मत कहो, मैं अब भी अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए तैयार हूँ। मैं आज चंदा को अपने साथ ही ले जाऊँगा।" "नहीं अभिलाष, चंदा नहीं जायेगी तुम्हारे साथ। जाओ! जा करके अपनी दौलतमंद बीबी के साथ वफा निबाहो। और हाँ अभिलाष तुम यदि चाहो तो अपनी इस तसवीर को भी साथ ले जा सकते हो। इसे स्वयं चंदा अपने हाथों से तुम्हें देगी। तुम्हारे ब्याह के उपहार के रूप में।

कुछ ही क्षणों बाद चंदा ने वह तसवीर अभिलाष के हाथों में थमा दी। तसवीर लेते हुए अभिलाष के हाथ कांप रहे थे। "मुझे क्षमा कर देना चंदा, मैं तुम्हारे प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह न कर सका।" कहते हुये वह तुरन्त ही वहाँ से चल दिया।

सुमन और चंदा उसे जाते हुये देखती रहीं। दो विवश और निःसहाय नारियाँ ··· ··· जिनके जीवन में इन्तजारों की घड़ियाँ कभी समाप्त नहीं होतीं। ×

प्यार : प्लास्टिक के फूल की तरह

प्रिये,
तुम्हारे जूड़े में
लगा
प्लास्टिक का
यह फूल
कितना सुन्दर है,
कितना मोहक है,
और
कभी न मुरझाने वाला है,
मेरे प्यार की तरह।

प्रिये,
मेरे जूड़े में
लगा
प्लास्टिक का
यह फूल
सचमुच
बहुत सुन्दर है,
बहुत मोहक है,
लेकिन
नकली है
तुम्हारे प्यार की तरह।

—डा० प्रणवीर चौहान, आगरा

भन्डाफोड़

मन्त्री जी ने भन्डा फोड़ा
गोयन्काजी ने ७८ लाख मारा है।
विरोधी चिल्लाये
यह कहां तक सही है कि
इसमें सरकारी प्रतिनिधियों का भी खाता है
मन्त्रीजी धीरे से फुसफुसाये
अधिकारियों से माल ऊपर जाता है।
लेकिन गोयनका जी का धन
जे. पी. के आन्दोलन को चलाता है
अब तुम ही बताओ,
जब हमारी सरकार को
यह फूटी आँख नहीं सुहाता है।
तो हम जिसकी कृपा पर मन्त्री बने बैठे
उससे कैसे करलें बिगाड़ खाता है।

—'बन्धु' आगरा

क्यू···

राशन की 'क्यू' देखकर
एक मूर्ख बोला—
साहब!
एक टिकिट मेरा ले लें,
मैंने कहा—
भाई!
यह 'टिकिट घर' नहीं,
राशन की दुकान है।
ओह! सौरी
वह बोला—
मैं समझा था,—
यह फिल्म
'रोटी कपड़ा और मकान' है।

—सन्तोष 'गगन'

परोपकार का फल

विन्दर्भ देश के महाराज रामसिंह के राज्य पुरोहित पंडित शतानन्द थे पडित शतानन्द प्रकाडं विद्वान एवं ज्योतिष में अद्वितीय थे। इतना ही नहीं अपितु अपने सद्व्यवहार एवं परोपकार बृत्ति के कारण पंडित जी जनता को प्राणों से भी प्यारे थे।

पंडित जी को किसी बात की कमी न थी। सभी प्रकार का सुख वैभव उन्हें प्राप्त था। उनकी पत्नी का नाम शान्ति देवी था। जैसा नाम वैसा गुण था। पंडित जी को कोई सन्तान न थी इसलिए पंडित जी मन ही मन बहुत दुखी रहते थे।

एक बार पंडित जी शान्ति देवी के

बबिता अग्रवाल, लश्कर

राजू अग्रवाल, बरेली

साथ तीर्थ यात्रा के लिए निकले। चारों धाम की यात्रा के पश्चात पंडित जी अपनी राजधानी लौट रहे थे कि रास्ते में रात्रि हो जाने पर पंडित जी व शान्तिदेवी रात बिताने के लिए एक छोटे से गाँव में एक बुढ़िया के यहाँ ठहर गये। उस बुढ़िया ने पंडितजी का बड़ा आवभगत किया परन्तु उसके चेहरे से वेदना स्पष्ट रूप से झलक रही थी। पंडित जी के लिए नाना प्रकार के भोजन परोसे गये और पंडित जी भोजन के लिए बैठ गये परन्तु भोजन शुरू करने के पूर्व ही पंडितजी के कानों ने सिसकियों का अनुभव किया। पंडितजी ने उस बुढ़िया से पूछा कि माँ यह कौन रो रहा है इस पर बुढ़िया अपने को रोक न सकी और वह स्वयं फफक-फफक कर रोने लगी। पंडितजी के ढढास बँधाने पर बुढ़िया

विवेक अग्रवाल, बरेली

ने बताया कि इस गाँव के पास एक जंगल है जिसमें बृक्र दत्त नाम का एक राक्षस रहता है जिसके भोजन के लिए गांव वालों को बारी-बारी से एक आदमी को नानाप्रकार के मिष्ठान के साथ भेजना पड़ता है। आज मेरे परिवार की बारी है। मेरे एक मात्र लड़का है जिसकी पिछले वर्ष शादी की थी मेरे पास इतना धन भी नहीं है कि मैं किसी आदमी को खरीदकर उसके पास भेज सकूं। यही कारण है कि मेरी बहू सिसकियाँ भर रही हैं। इतना सुनकर पंडित जी ने भोजन की थाली को प्रणाम किया और उसकें कुछ एक कण अपनी पगड़ी में रख कर उठ खड़े हुए और बुढ़िया से कहा कि माँ मैं भोजन नहीं करूँगा मैं जाता हूं। भगवान् तेरा कल्याण करें। पंडित जी इतना कह कर बड़ी तेजी से लापता हो गये। घर में कुहराम मच गया जैसे-जैसे रात बीतती जाती थी वैसे वैसे गाँव की जनता बुढ़िया के दरवाजे पर इकट्ठी हो रही थी और अर्धरात्रि के करीब बुढ़िया के लड़के को अच्छा-अच्छा भोजन कराया गया। उसके बाद नाना-प्रकार के पकवानों सहित उसे एक रथ पर बैठा कर जंगल की ओर गाँव के सभी लोग चल पड़े। चलते चलते घनघोर जंगल के अन्दर पहुंच गये। वहां पर एक बरगद के पेड़ के नीचे एक सिहासक बना था। जोकि हीरे मोतियों मे सजा था जिसके

पप्पू अग्रवाल, कोंच

—राजोव कुमार अग्रवाल,
फतेहपुर

नन्ने-मुन्ने
सम्पादक—सुनील भैया

मंगल-मिलन

कासगंज निवासी चि० प्रदीप अग्रवाल सुपुत्र श्री शशीप्रकाश (करारी वाले) एवं सौ० रेखा अग्रवाल सुपुत्री श्री बाबूलाल जी अजमेर निवासी। का मंगल मिलन

प्रकाश से समस्त जंगल प्रकाशित हो रहा था। सभी लोग उस बुढ़िया के पुत्र को वहीं पर छोड़ कर हाहाकार करते हुए लौट गये। गाँव वालों के चले जाने के बाद एक भयँकर आवाज हुई और उस आवाज के साथ विशालकाय राक्षस वक्रदत्त आ गया। वह आते ही स्वादिष्ट पकवानों को खाने लगा। इतने में ही एक कड़कती हुई आबाज ने उसे चौंका दिया। उस आबाज को सुनकर राक्षस की आंखें लाल हो गई और वह उस आवाज की ओर चल पड़ा कि इतनी ही देर में एक सनसनाता हुए तीर ने उसके वक्षस्तल को विदीर्ण कर दिया और उसके प्राण पखेरू उड़ गये। उसके स्थान पर देवस्वरूप यक्ष प्रकट हो गया और वह शान्ति देवी की स्तुति करने लगा और तब तक शान्ति देवी धनुष ब ण धारण किये आ पहुँची तथा उसी समय पंडित जी भी हाथ में नंगी तलवार लिए आ पहुंचे जो शान्ति देवी को अपलक देखने लगे। यक्ष देव ने पूर्व जन्म की कथा सुनाई और शान्ति देवी को पुत्र रत्न देने का वरदान देकर अन्तर्गत ध्यान हो गया। ●

क्या आप जानते हैं कि.....

(एम० के गारखेल, बरेली)

१. विश्व की सबसे लम्बी नदी अमरीका की मिसीसिपी नदी है।

२. विश्व में सिगार का सबसे बड़ा औद्योगिक नगर क्यूबा का हवाना नामक शहर है।

३. विश्व का सबसे ऊँचा बुर्ज जापान की राजधानी टोकियों में स्थित है।

४. विश्व के प्रसिद्ध देश अमरीका ने ४ जुलाई १७७६ को स्वतन्त्रता प्राप्त की थी।

५. विश्व की सबसे बड़ी सेना, चीन की मुक्ति सेना है जिसकी संख्या २० लाख है।

६. विश्व में खेल के सामान का सबसे बड़ा औद्योनिक नगर सियाल कौट है जो पाकिस्तान में स्थित है।

७. मानव अपोलों यान के द्वारा २९ जुलाई १९६९ को चन्द्रमा पर उतरा था। ●

श्रीमान् .....

आपकी ग्राहक सं० १७/

प्रजातन्त्र, समाजवाद एवं अहिंसा के पुजारी

अग्रकुल प्रवर्त्तक महाराजा अग्रसैन जी

अग्रोहा उद्धारक

सेठ हरभजन शाह, श्री श्रीचन्द जी एवं दीवान नन्नूमल जी

राष्ट्रीय गौरव

भारतेन्दु हरिश्चन्द, पंजाब केसरी ला० लाजपतिराय

श्री जगन्नाथ प्रसाद रत्नाकर, त्यागमूर्ति सेठ जमनालाल बजाज

एवं

लोहपुरुष डा० राममनोहर लोहिया आदि

महान विभूतियों पर इतिहासिक १२ कहानियों का संग्रह

श्री त्रिलोक गोयल, अजमेर द्वारा रचित

खंडहर बता रहे हैं!

अग्रवंश की इतिहास की जानकारी हेतु आज ही मंगाईये

मूल्य केवल ३) **१० प्रति मंगाने पर डाक खर्च फ्री**

प्रकाशक :—

बन्धु प्रकाशन मन्दिर

कोकामल मार्केट, प्रयागनरायण मार्ग, आगरा

प्रकाशक एवं मुद्रक :—प्रकाश बंसल सुनिल मुद्रणालय के लिये विमल मुद्रण केन्द्र में छपा, अग्रबन्धु कार्यालय, कोकामल मार्केट, प्रयागनरायन मार्ग, आगरा-३